शिशु जन्म पत्रिका

Nandini

शिशु जन्म पत्रिका बच्चों के लिये एक सर्वप्रिय मॉडल है। इसमें ज्योतिषीय गणनाएं, फलादेश व उपाय जैसे रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान आदि सहित लगभग 100 पेज की रिपोर्ट तैयार होती है। इसमें अंक ज्योतिष फलादेश भी दिया गया है। साथ ही इसमें नक्षत्र फलादेश भी दिया गया है। यह किसी बच्चे के बारे में जानने के लिए अद्वितीय रिपोर्ट है।

शिशु जन्म पत्रिका में फलादेश के साथ बृहत ज्योतिषीय गणनाएं भी दी गई हैं जो कि किसी ज्योतिषी को समझने व भविष्यकाल का फलादेश जानने के लिए उत्तम हैं।

Order No: 119371301 Date: 07/09/2025

Nandini

03 Sep 2025

09:43 AM

Jalandhar

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Nandini

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**03/09/2025**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**09:43:00 घंटे**
इष्ट	09:05:34 घटी
स्थान	**Jalandhar**
राज्य	Punjab
देश	India

अक्षांश	31:19:33 उत्तर
रेखांश	75:34:34 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:27:42 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:15:18 घंटे
वेलान्तर	00:00:38 घंटे
साम्पातिक काल	08:05:32 घंटे
सूर्योदय	06:04:46 घंटे
सूर्यास्त	18:48:39 घंटे
दिनमान	12:43:53 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	16:43:08 सिंह
लग्न के अंश	02:42:31 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पूर्वाषाढ़ा - 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	आयुष्मान
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	धा-धारिणी
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	भाद्रपद	12
पंजाबी	संवत : 2082	भाद्रपद	19
बंगाली	सन् : 1432	भाद्रपद	17
तमिल	संवत : 2082	आवनी	18
केरल	कोल्लम : 1201	चिगंम	18
नेपाली	संवत : 2082	भाद्रपद	18
चैत्रादि	संवत : 2082	भाद्रपद	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2082	भाद्रपद	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 28:22:11
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 23:08:17 घंटे
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____: 16:16:58 घंटे
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 16:13:02 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 29:39:55
भभोग _____: 63:13:07
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 10 वर्ष 8 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

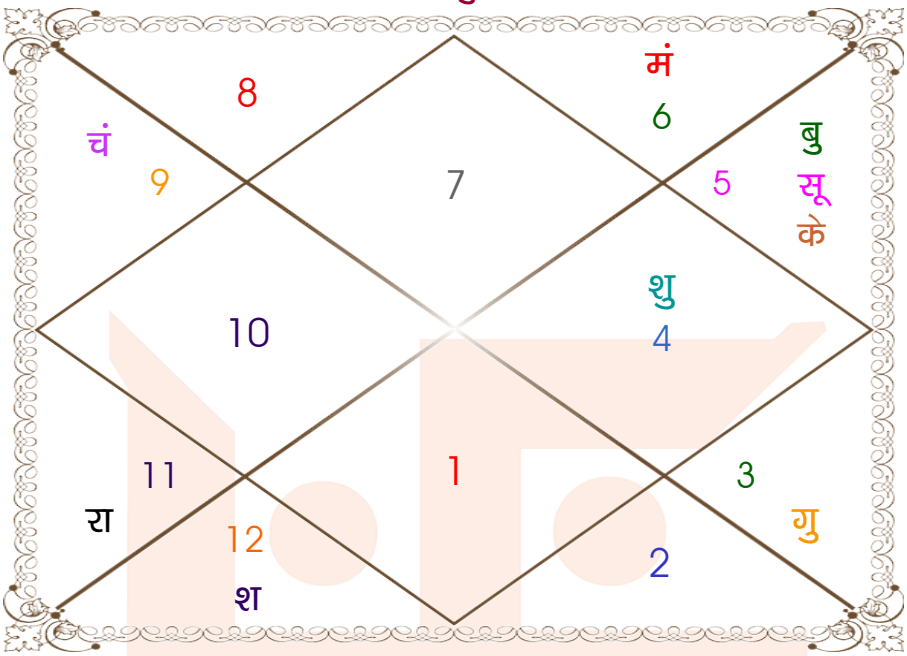

चन्द्र कुंडली

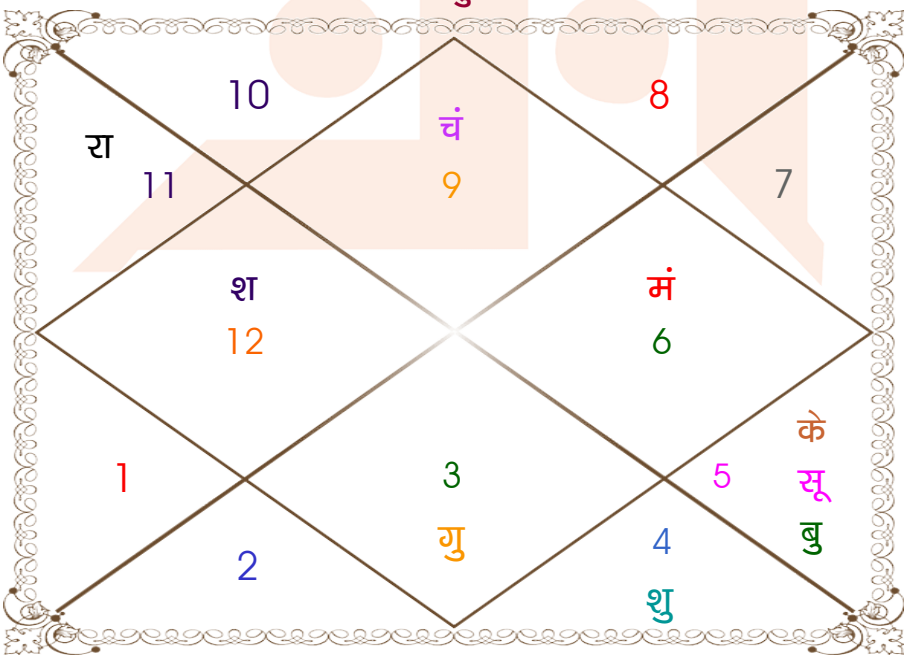

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

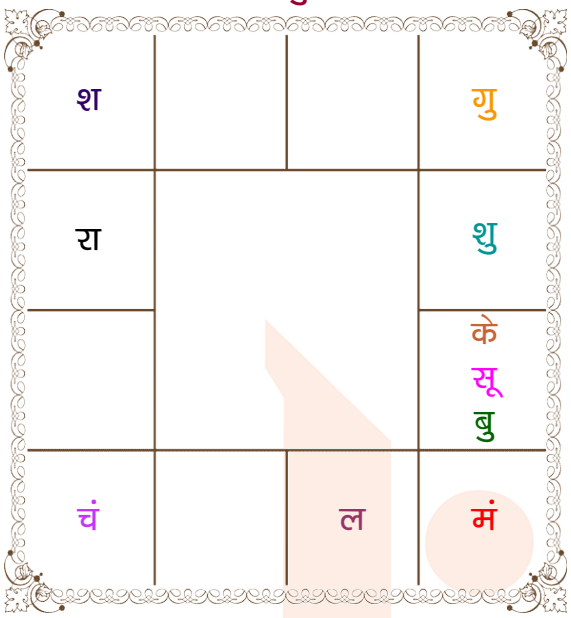

लग्न कुंडली

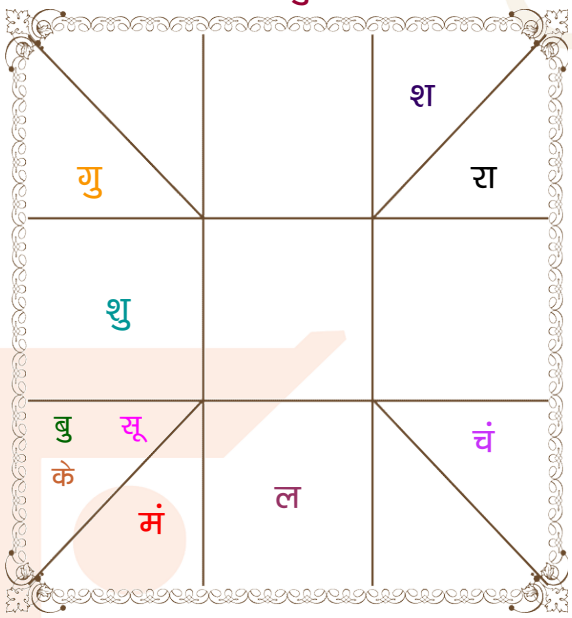

विंशोत्तरी

शुक्र 10वर्ष 8मा 5दि

शुक्र

03/09/2025

11/05/2136

शुक्र	10/05/2036
सूर्य	10/05/2042
चन्द्र	10/05/2052
मंगल	10/05/2059
राहु	10/05/2077
गुरु	10/05/2093
शनि	11/05/2112
बुध	11/05/2129
केतु	11/05/2136

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 8मा 26दि

सिद्धा

03/09/2025

31/05/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	03/09/2025
पिंगला	29/11/2025
धान्या	30/06/2026
भ्रामरी	10/04/2027
भद्रिका	30/03/2028
उल्का	31/05/2029

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	02:42:31	306:47:47	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
सूर्य			सिंह	16:43:08	00:58:06	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मूलत्रिकोण
चंद्र			धनु	19:32:42	12:38:31	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल			कन्या	23:06:42	00:39:06	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	सूर्य	शत्रु राशि
बुध		अ	सिंह	06:58:02	01:55:12	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
गुरु			मिथु	24:02:33	00:10:34	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	15:57:26	01:12:12	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	05:39:15	00:04:15	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
राहु	व		कुंभ	24:09:07	00:00:48	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	24:09:07	00:00:48	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	07:14:35	00:00:09	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	---
नेप	व		मीन	07:05:23	00:01:32	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो	व		मक	07:31:17	00:01:01	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			कर्क	05:01:04	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:01

लग्न-चलित

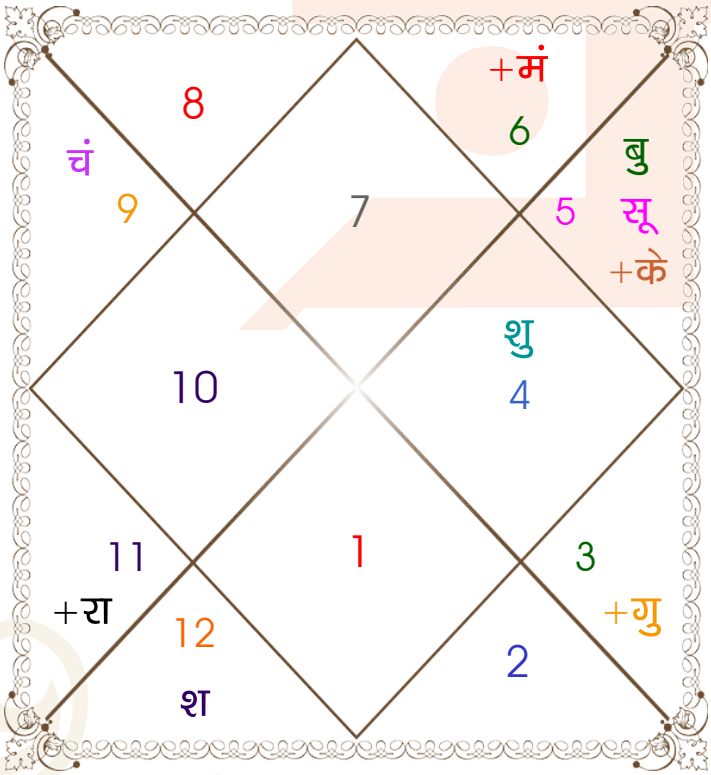

चन्द्र कुंडली

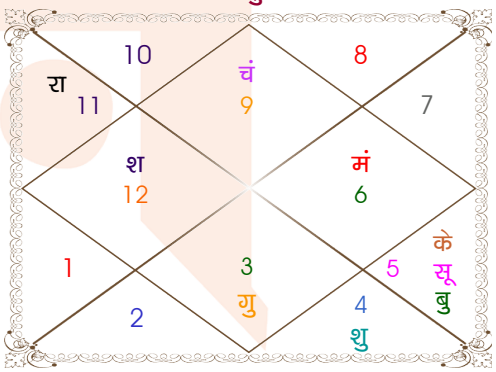

नवमांश कुंडली

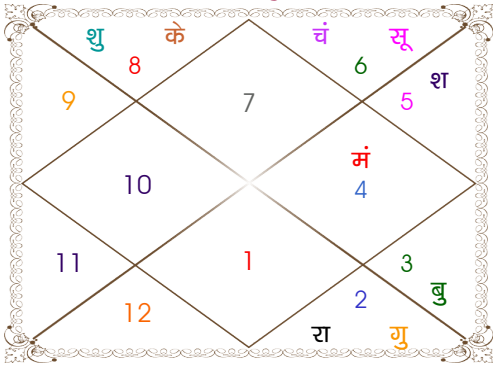

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	18:05:37	तुला	02:42:31
2	तुला	18:05:37	वृश्चिक	03:28:42
3	वृश्चिक	18:51:48	धनु	04:14:53
4	धनु	19:37:59	मकर	05:01:04
5	मकर	19:37:59	कुम्भ	04:14:53
6	कुम्भ	18:51:48	मीन	03:28:42
7	मीन	18:05:37	मेष	02:42:31
8	मेष	18:05:37	वृष	03:28:42
9	वृष	18:51:48	मिथुन	04:14:53
10	मिथुन	19:37:59	कर्क	05:01:04
11	कर्क	19:37:59	सिंह	04:14:53
12	सिंह	18:51:48	कन्या	03:28:42

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	02:42:31
2	वृश्चिक	01:21:51
3	धनु	02:22:58
4	मकर	05:01:04
5	कुम्भ	07:23:47
6	मीन	07:03:56
7	मेष	02:42:31
8	वृष	01:21:51
9	मिथुन	02:22:58
10	कर्क	05:01:04
11	सिंह	07:23:47
12	कन्या	07:03:56

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

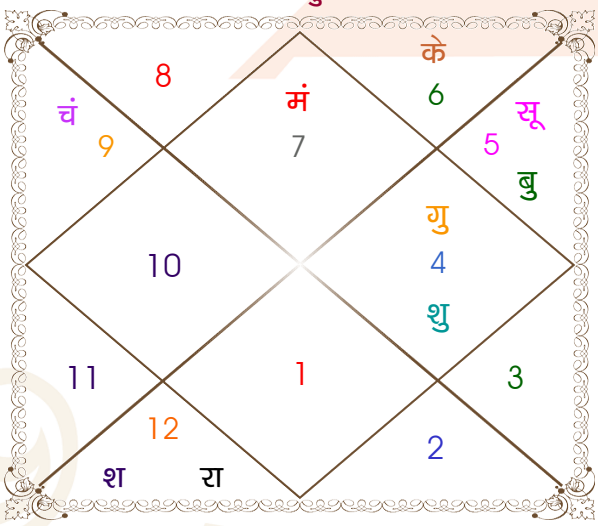

भाव कुंडली

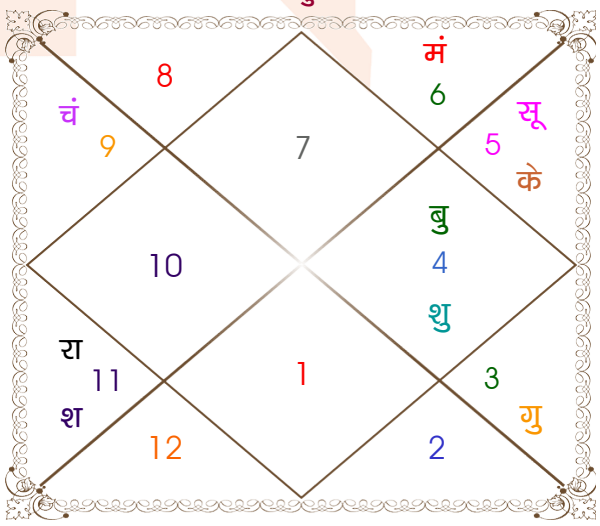

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	स्वस्थ	आगमन	5.92	35 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध	शक्त	निद्रा	1.16	25 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	कुमार	खल	भोजन	1.53	35 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	कुमार	विकल	निद्रा	0.00	81 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत	खल	प्रकाश	6.57	78 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	खल	निद्रा	1.26	35 %
शनि	कलत्र	आयु	मृत	शक्त	प्रकाश	1.48	48 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	प्रकाश	0.00	63 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	निद्रा	0.00	63 %
कुल						**17.93**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

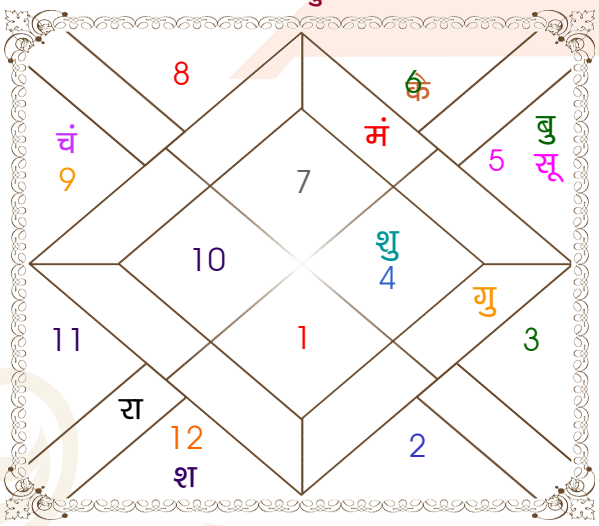

लग्न-चलित

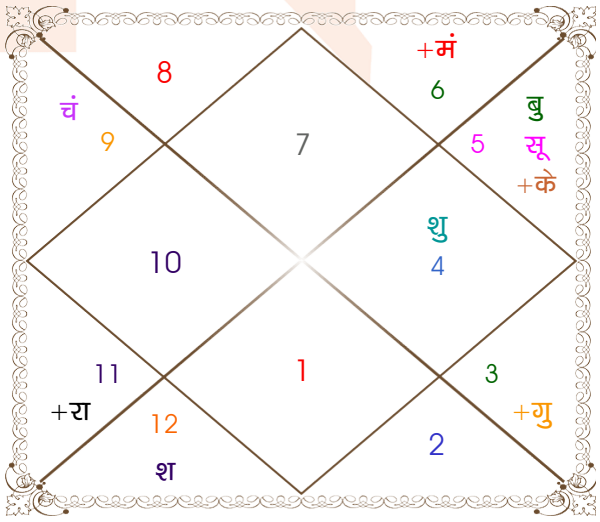

सुदर्शन चक्र

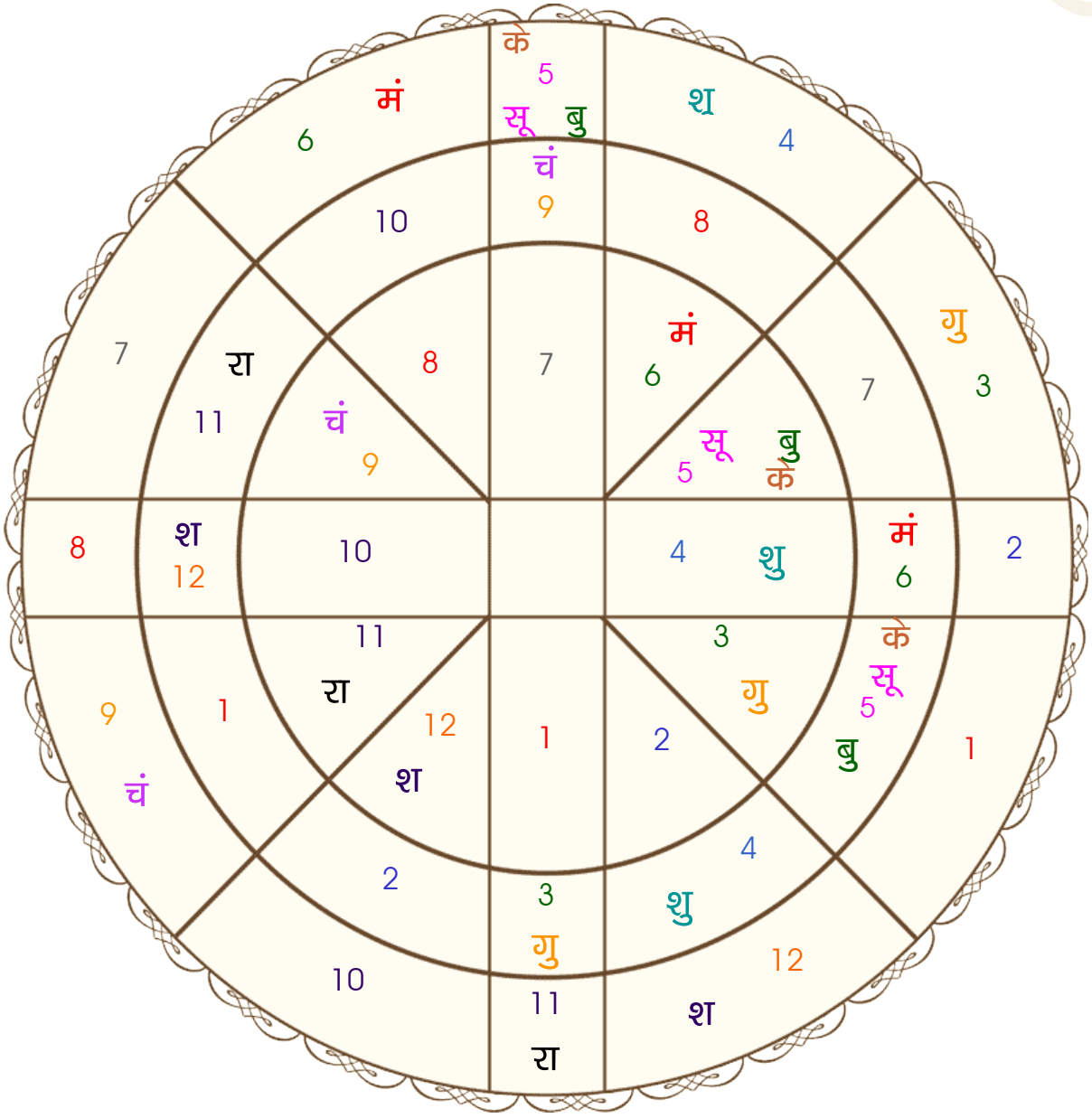

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 6 मास 7 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	16:49:35	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शनि
चंद्र		धनु	19:39:09	गुरु	शुक्र	राहु	शुक्र
मंगल		कन्या	23:13:09	बुध	चंद्र	सूर्य	केतु
बुध		सिंह	07:04:29	सूर्य	केतु	राहु	शुक्र
गुरु		मिथु	24:09:00	बुध	गुरु	बुध	बुध
शुक्र		कर्क	16:03:53	चंद्र	शनि	गुरु	सूर्य
शनि	व	मीन	05:45:41	गुरु	शनि	बुध	केतु
राहु	व	कुंभ	24:15:34	शनि	गुरु	बुध	केतु
केतु	व	सिंह	24:15:34	सूर्य	शुक्र	बुध	बुध
हर्ष		वृष	07:21:01	शुक्र	सूर्य	केतु	राहु
नेप	व	मीन	07:11:50	गुरु	शनि	बुध	शनि
प्लूटो	व	मक	07:37:43	शनि	सूर्य	केतु	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	02:48:58	शुक्र	मंगल	शुक्र	शुक्र
2	वृश्चि	01:28:17	मंगल	गुरु	राहु	राहु
3	धनु	02:29:25	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
4	मक	05:07:31	शनि	सूर्य	बुध	बुध
5	कुंभ	07:30:14	शनि	राहु	राहु	शनि
6	मीन	07:10:22	गुरु	शनि	बुध	शनि
7	मेष	02:48:58	मंगल	केतु	शुक्र	बुध
8	वृष	01:28:17	शुक्र	सूर्य	गुरु	शनि
9	मिथु	02:29:25	बुध	मंगल	केतु	शनि
10	कर्क	05:07:31	चंद्र	शनि	शनि	राहु
11	सिंह	07:30:14	सूर्य	केतु	राहु	मंगल
12	कन्या	07:10:22	बुध	सूर्य	केतु	शुक्र

के.पी. अयनांश : 24:06:34

फॉरच्युना : कुम्भ 05:38:32

लग्न कुंडली

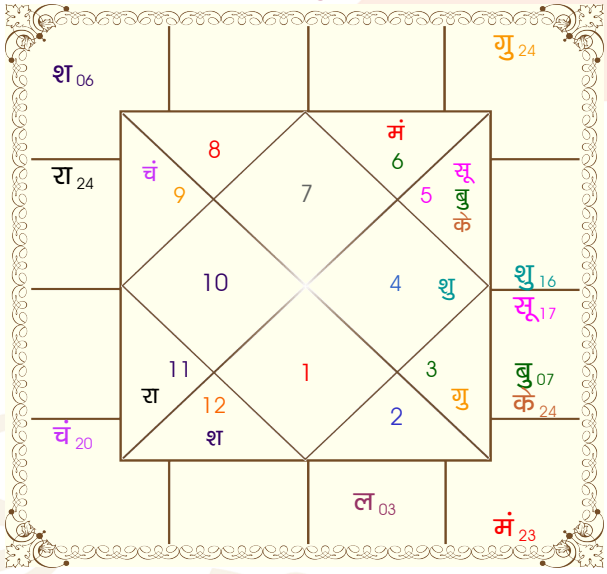

भाव कुंडली

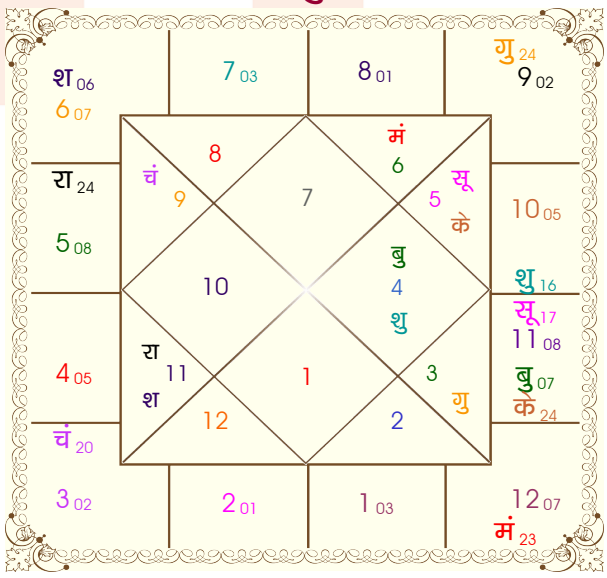

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- चंद्र- शुक्र- केतु-
2	मंगल-
3	चंद्र, मंगल, गुरु, राहु-
4	शुक्र- शनि,
5	शुक्र+ शनि+ राहु,
6	गुरु, राहु-
7	मंगल-
8	सूर्य- चंद्र- शुक्र- केतु-
9	बुध- गुरु+ राहु,
10	सूर्य, चंद्र+ मंगल- बुध, शुक्र, केतु,
11	सूर्य, बुध, केतु,
12	मंगल, बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 8- 10, 11,
चंद्र	1- 3, 8- 10+
मंगल	2- 3, 7- 10- 12,
बुध	9- 10, 11, 12-
गुरु	3, 6, 9+
शुक्र	1- 4- 5+ 8- 10,
शनि	4, 5+
राहु	3- 5, 6- 9,
केतु	1- 8- 10, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	राहु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

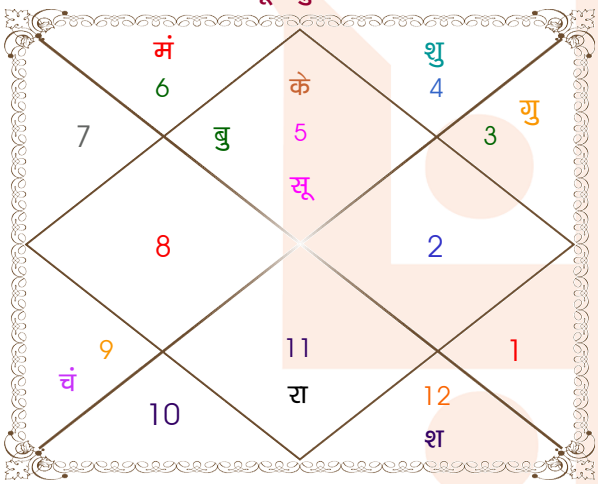

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

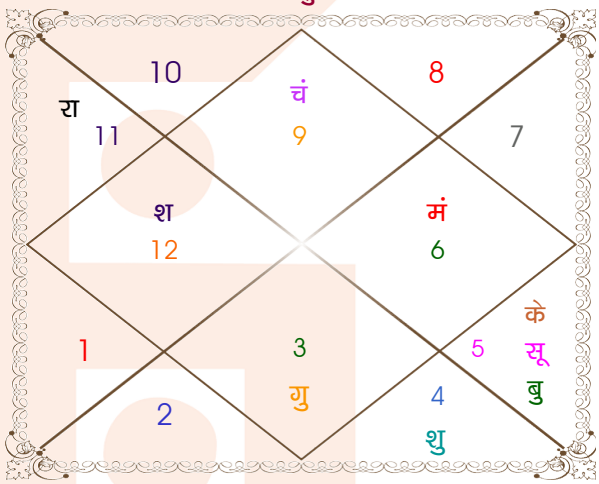

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

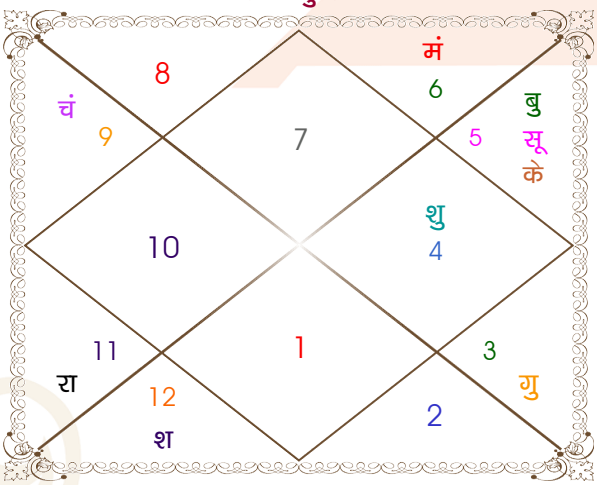

देह विचारः

होरा कुंडली

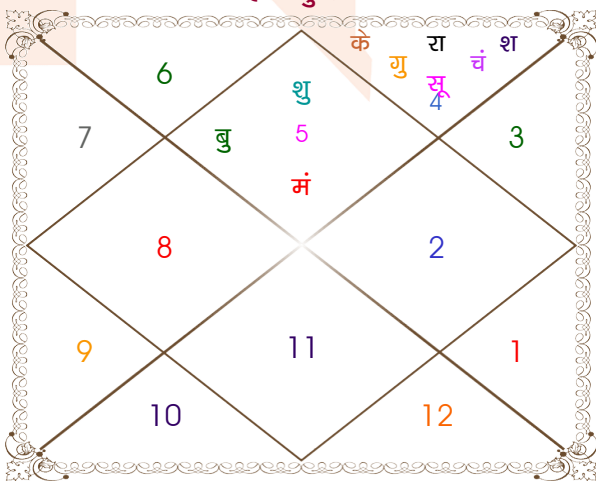

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

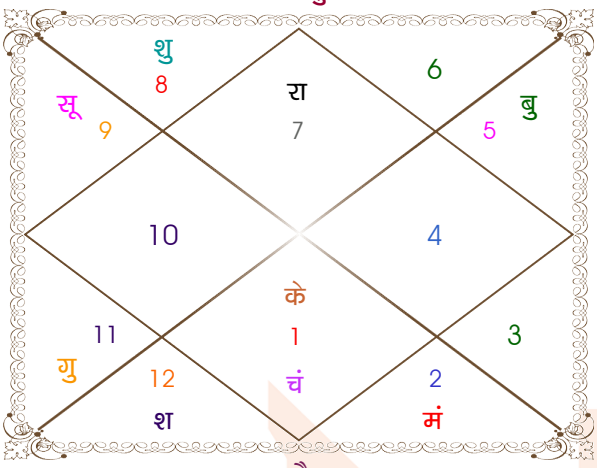

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

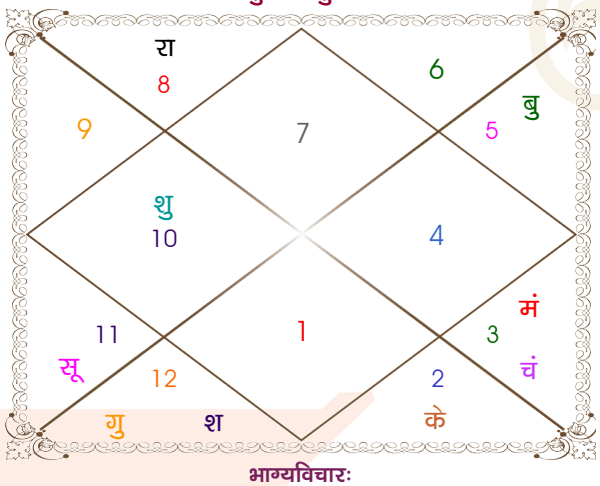

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

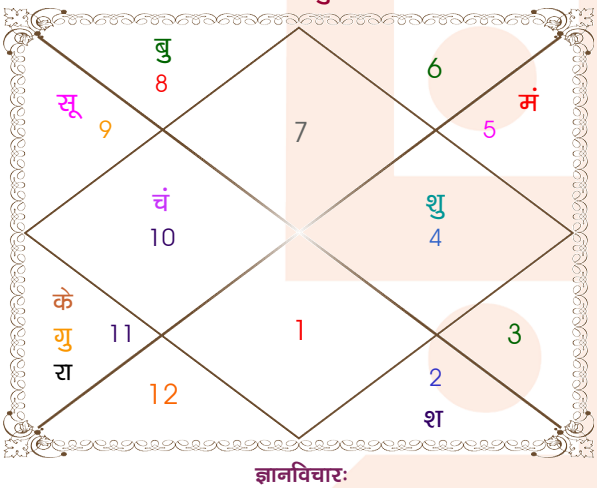

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

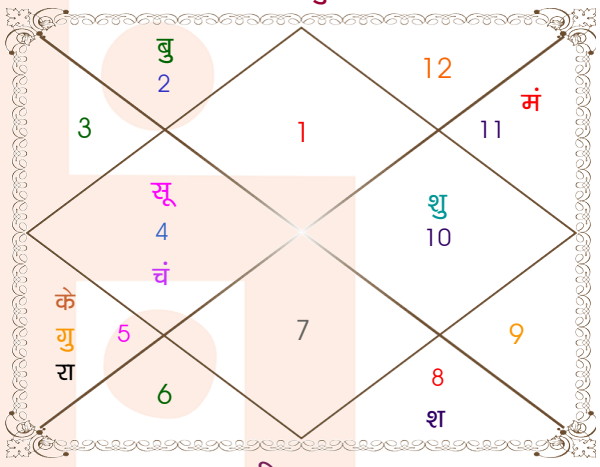

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

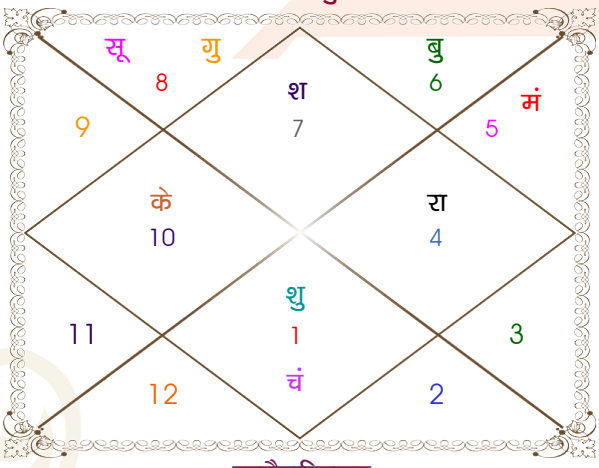

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

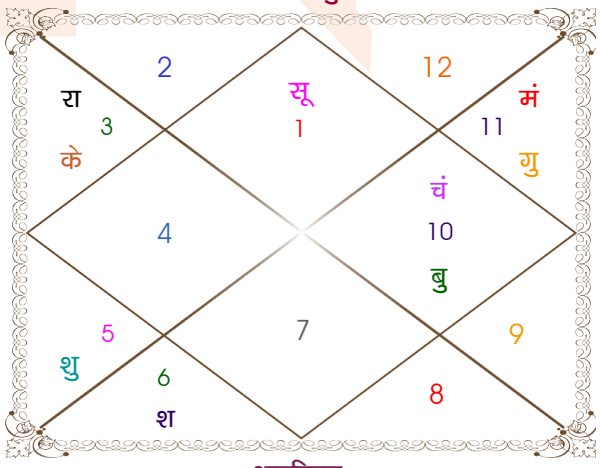

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

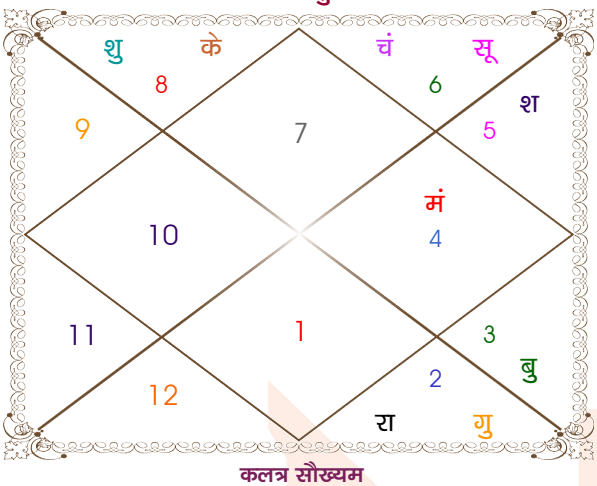

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

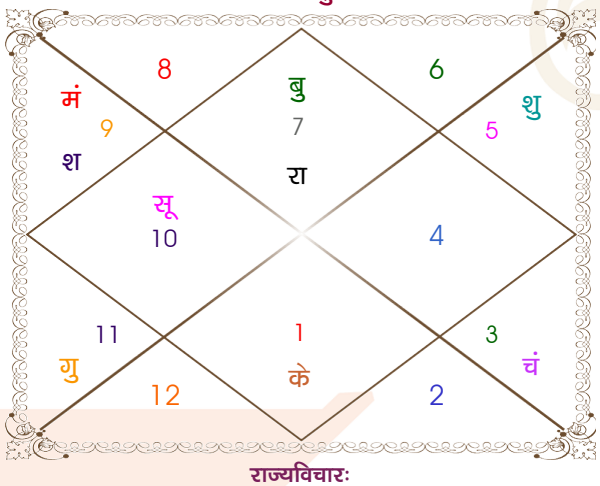

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

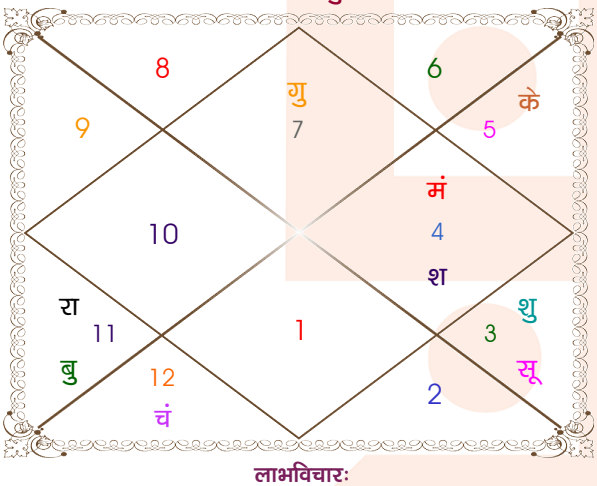

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

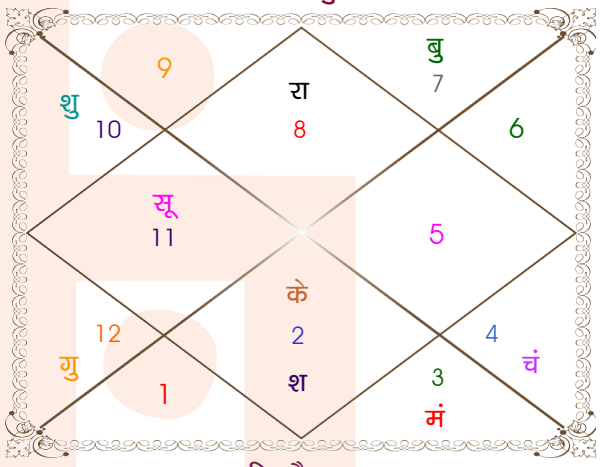

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

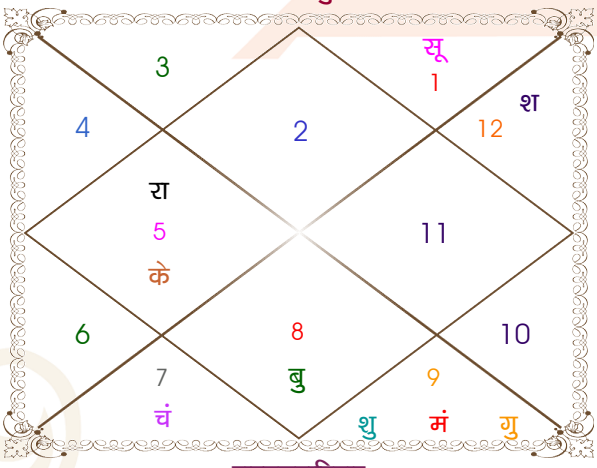

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

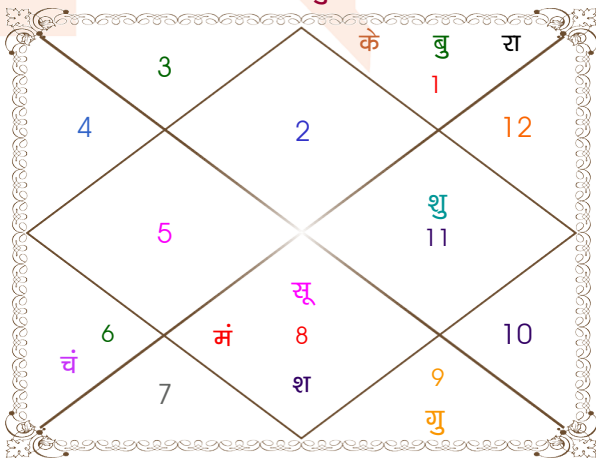

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

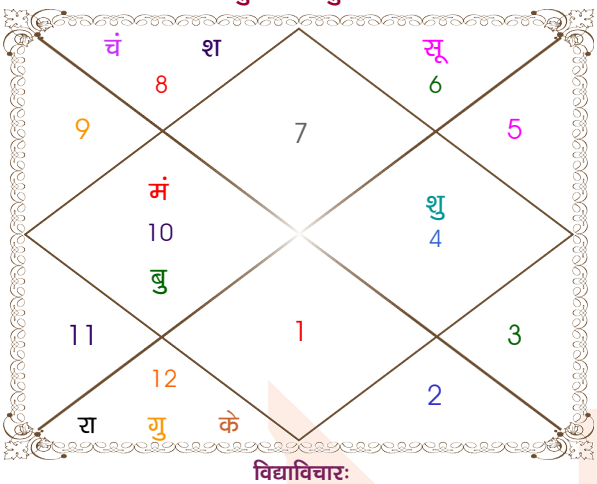

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

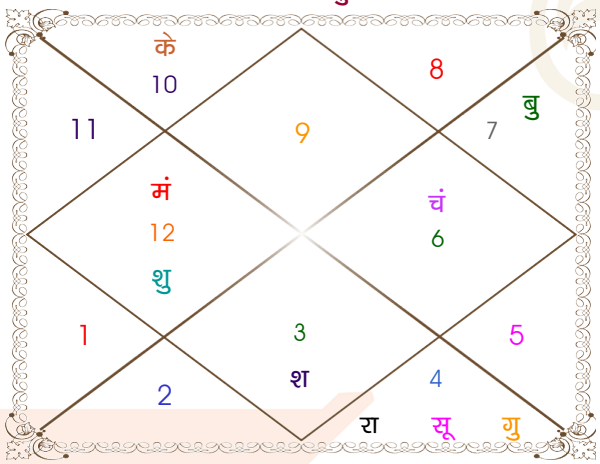

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

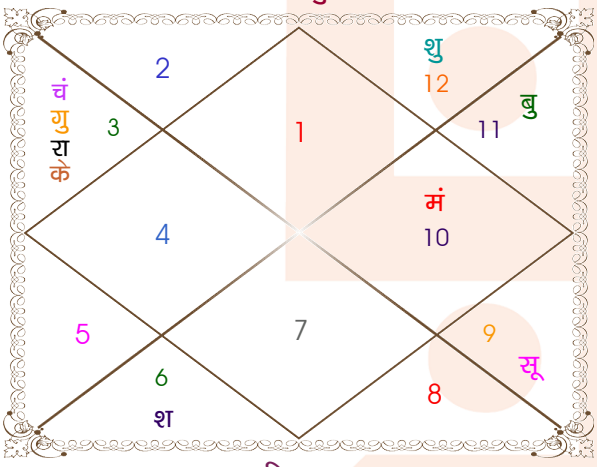

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

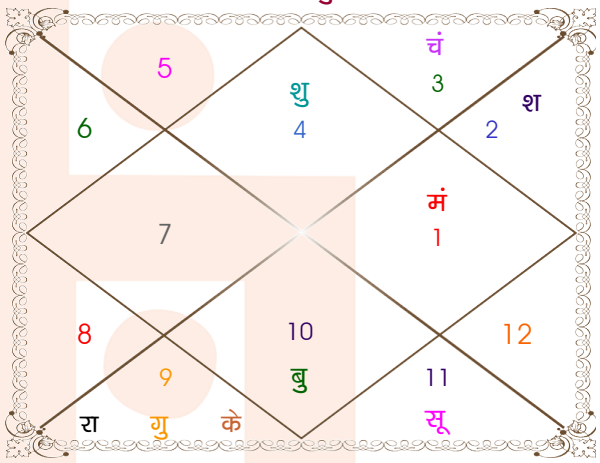

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

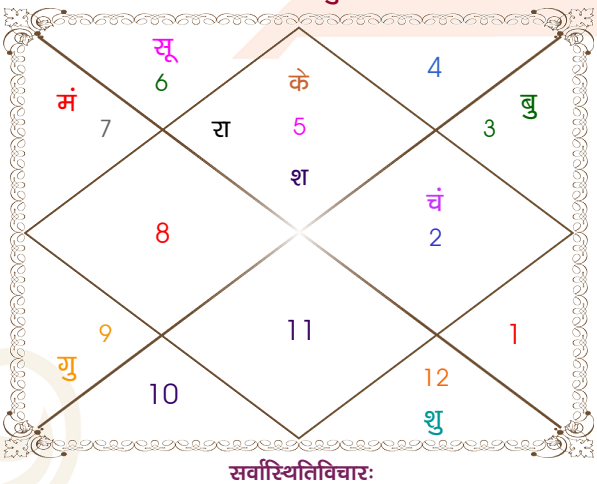

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

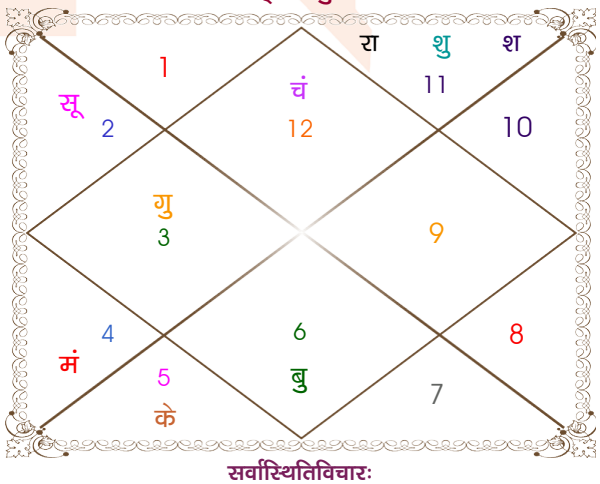

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	18	16	18	47	56	24	15
सप्तवर्गज बल	126	109	101	109	98	77	62
ओजयुग्मक बल	15	15	0	30	15	30	15
केन्द्र बल	30	15	15	30	15	60	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	188	154	135	216	184	191	107
कुल दिग्बल	46	55	34	41	27	4	51
नतोन्नत बल	46	14	14	60	46	46	14
पक्ष बल	19	82	19	19	41	41	19
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	80	59	21	44	58	53	30
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	145	185	54	229	281	140	63
कुल चेष्टाबल	0	0	17	13	20	20	54
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	5	-20	4	10	2	6	0
कुल षट्बल	445	425	260	534	548	403	283
रूप षट्बल	7.4	7.1	4.3	8.9	9.1	6.7	4.7
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.2	0.9	1.3	1.4	1.2	0.9
संबंधित पद	1	5	7	3	2	4	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	25.41	25.20	17.42	24.49	33.83	21.66	28.27
कष्ट फल	31.60	29.12	42.54	24.49	12.04	38.21	16.38

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	403	260	548	283	283	548	260	403	534	425	445	534
भावदिग्बल	60	10	40	0	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	50	84	35	38	96	100	35	0	-21	3	14	18
कुल भाव बल	513	354	623	321	398	688	325	443	533	428	509	603
रूप भाव बल	8.5	5.9	10.4	5.4	6.6	11.5	5.4	7.4	8.9	7.1	8.5	10.0
संबंधित पद	5	10	2	12	9	1	11	7	4	8	6	3

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	6	4	4	4	1	3	3	2	4	3	3	39
गुरु	7	4	6	4	7	4	4	4	4	4	3	5	56
मंगल	2	4	5	2	1	2	6	2	6	3	2	4	39
सूर्य	5	4	5	3	2	5	5	3	5	4	3	4	48
शुक्र	4	4	4	5	4	1	6	5	5	5	5	4	52
बुध	5	6	4	6	3	4	6	4	4	6	1	5	54
चंद्र	2	5	5	4	4	3	5	3	4	5	4	5	49
बिन्दु	27	33	33	28	25	20	35	24	30	31	21	30	337
रेखा	29	23	23	28	31	36	21	32	26	25	35	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	5	1	1	2	0	0	0	0	3	0	0	12
गुरु	3	0	3	0	3	0	1	0	0	0	0	1	11
मंगल	1	2	3	0	0	0	4	0	5	1	0	2	18
सूर्य	3	0	2	0	0	1	2	0	3	0	0	1	12
शुक्र	0	3	0	1	0	0	2	1	1	4	1	0	13
बुध	2	2	3	2	0	0	5	0	1	2	0	1	18
चंद्र	0	2	1	1	2	0	1	0	2	2	0	2	13
रेखा	9	14	13	5	7	1	15	1	12	12	1	7	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	5	1	1	2	0	0	0	0	3	0	0	12
गुरु	3	0	3	0	3	0	1	0	0	0	0	1	11
मंगल	1	2	3	0	0	0	2	0	5	1	0	2	16
सूर्य	3	0	2	0	0	1	2	0	3	0	0	1	12
शुक्र	0	1	0	1	0	0	2	1	1	3	1	0	10
बुध	2	2	3	2	0	0	3	0	1	2	0	1	16
चंद्र	0	1	1	1	2	0	1	0	2	2	0	2	12
रेखा	9	11	13	5	7	1	11	1	12	11	1	7	89

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	95	101	139	118	94	71	97
ग्रह पिंड	48	57	65	54	65	12	37
शोध्य पिंड	143	158	204	172	159	83	134

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

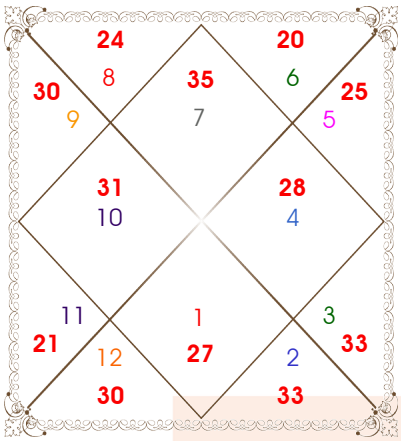

सूर्य का अष्टकवर्ग

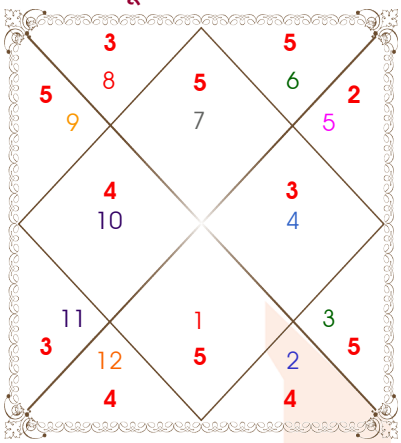

चंद्र का अष्टकवर्ग

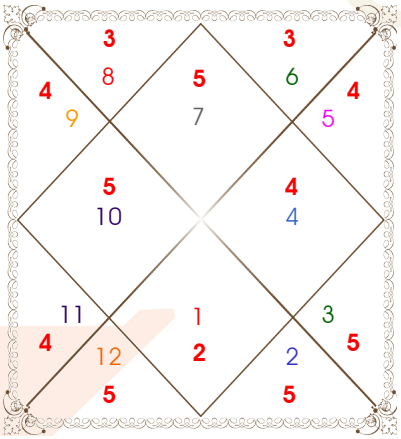

मंगल का अष्टकवर्ग

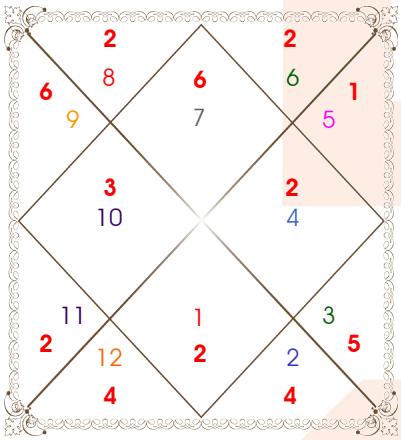

बुध का अष्टकवर्ग

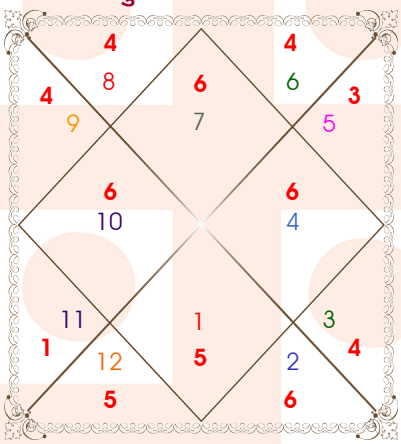

गुरु का अष्टकवर्ग

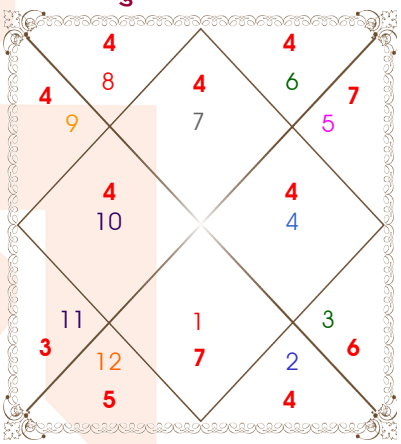

शुक्र का अष्टकवर्ग

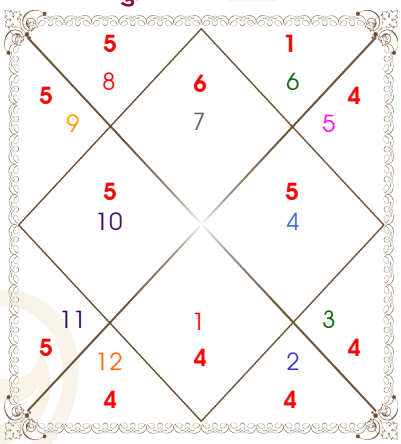

शनि का अष्टकवर्ग

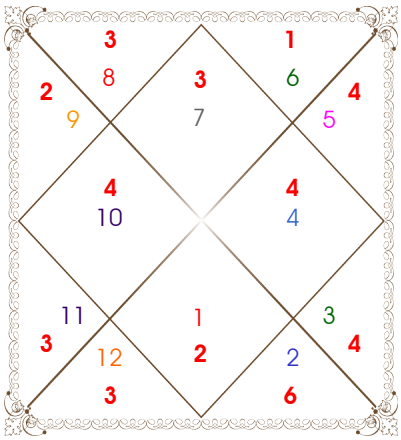

लग्न का अष्टकवर्ग

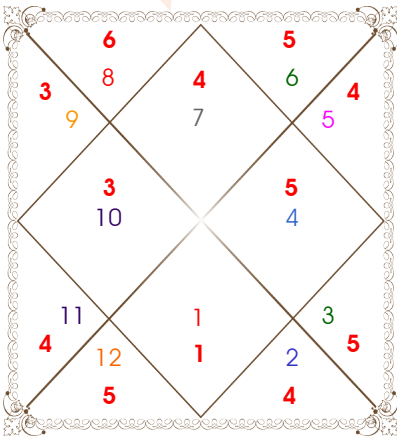

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 8 मास 5 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
03/09/2025		10/05/2036		10/05/2042		10/05/2052		10/05/2059	
10/05/2036		10/05/2042		10/05/2052		10/05/2059		10/05/2077	
	00/00/0000	सूर्य	27/08/2036	चंद्र	10/03/2043	मंगल	06/10/2052	राहु	21/01/2062
	00/00/0000	चंद्र	26/02/2037	मंगल	10/10/2043	राहु	24/10/2053	गुरु	15/06/2064
	00/00/0000	मंगल	04/07/2037	राहु	09/04/2045	गुरु	30/09/2054	शनि	22/04/2067
	03/09/2025	राहु	28/05/2038	गुरु	09/08/2046	शनि	09/11/2055	बुध	08/11/2069
राहु	10/07/2026	गुरु	17/03/2039	शनि	10/03/2048	बुध	05/11/2056	केतु	27/11/2070
गुरु	10/03/2029	शनि	27/02/2040	बुध	09/08/2049	केतु	03/04/2057	शुक्र	27/11/2073
शनि	10/05/2032	बुध	02/01/2041	केतु	10/03/2050	शुक्र	03/06/2058	सूर्य	21/10/2074
बुध	10/03/2035	केतु	10/05/2041	शुक्र	09/11/2051	सूर्य	09/10/2058	चंद्र	21/04/2076
केतु	10/05/2036	शुक्र	10/05/2042	सूर्य	10/05/2052	चंद्र	10/05/2059	मंगल	10/05/2077

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
10/05/2077		10/05/2093		11/05/2112		11/05/2129		11/05/2136	
10/05/2093		11/05/2112		11/05/2129		11/05/2136		00/00/0000	
गुरु	28/06/2079	शनि	13/05/2096	बुध	07/10/2114	केतु	07/10/2129	शुक्र	10/09/2139
शनि	08/01/2082	बुध	21/01/2099	केतु	04/10/2115	शुक्र	07/12/2130	सूर्य	09/09/2140
बुध	15/04/2084	केतु	02/03/2100	शुक्र	04/08/2118	सूर्य	14/04/2131	चंद्र	11/05/2142
केतु	22/03/2085	शुक्र	02/05/2103	सूर्य	11/06/2119	चंद्र	13/11/2131	मंगल	11/07/2143
शुक्र	21/11/2087	सूर्य	13/04/2104	चंद्र	09/11/2120	मंगल	10/04/2132	राहु	04/09/2145
सूर्य	08/09/2088	चंद्र	13/11/2105	मंगल	06/11/2121	राहु	29/04/2133		00/00/0000
चंद्र	08/01/2090	मंगल	22/12/2106	राहु	26/05/2124	गुरु	05/04/2134		00/00/0000
मंगल	15/12/2090	राहु	28/10/2109	गुरु	01/09/2126	शनि	14/05/2135		00/00/0000
राहु	10/05/2093	गुरु	11/05/2112	शनि	11/05/2129	बुध	11/05/2136		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 10 वर्ष 7 मा 11 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
03/09/2025		10/07/2026		10/03/2029		10/05/2032		10/03/2035	
10/07/2026		10/03/2029		10/05/2032		10/03/2035		10/05/2036	
	00/00/0000	गुरु	17/11/2026	शनि	09/09/2029	बुध	03/10/2032	केतु	04/04/2035
	00/00/0000	शनि	20/04/2027	बुध	20/02/2030	केतु	03/12/2032	शुक्र	14/06/2035
	00/00/0000	बुध	05/09/2027	केतु	28/04/2030	शुक्र	24/05/2033	सूर्य	06/07/2035
	00/00/0000	केतु	01/11/2027	शुक्र	07/11/2030	सूर्य	15/07/2033	चंद्र	10/08/2035
	03/09/2025	शुक्र	11/04/2028	सूर्य	04/01/2031	चंद्र	09/10/2033	मंगल	04/09/2035
शुक्र	12/12/2025	सूर्य	30/05/2028	चंद्र	10/04/2031	मंगल	08/12/2033	राहु	07/11/2035
सूर्य	05/02/2026	चंद्र	19/08/2028	मंगल	17/06/2031	राहु	13/05/2034	गुरु	03/01/2036
चंद्र	07/05/2026	मंगल	15/10/2028	राहु	07/12/2031	गुरु	28/09/2034	शनि	10/03/2036
मंगल	10/07/2026	राहु	10/03/2029	गुरु	10/05/2032	शनि	10/03/2035	बुध	10/05/2036

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
10/05/2036		27/08/2036		26/02/2037		04/07/2037		28/05/2038	
27/08/2036		26/02/2037		04/07/2037		28/05/2038		17/03/2039	
सूर्य	15/05/2036	चंद्र	11/09/2036	मंगल	05/03/2037	राहु	22/08/2037	गुरु	06/07/2038
चंद्र	24/05/2036	मंगल	22/09/2036	राहु	24/03/2037	गुरु	05/10/2037	शनि	22/08/2038
मंगल	31/05/2036	राहु	19/10/2036	गुरु	10/04/2037	शनि	26/11/2037	बुध	02/10/2038
राहु	16/06/2036	गुरु	13/11/2036	शनि	01/05/2037	बुध	11/01/2038	केतु	19/10/2038
गुरु	01/07/2036	शनि	12/12/2036	बुध	19/05/2037	केतु	31/01/2038	शुक्र	07/12/2038
शनि	18/07/2036	बुध	07/01/2037	केतु	26/05/2037	शुक्र	26/03/2038	सूर्य	21/12/2038
बुध	03/08/2036	केतु	17/01/2037	शुक्र	17/06/2037	सूर्य	12/04/2038	चंद्र	15/01/2039
केतु	09/08/2036	शुक्र	17/02/2037	सूर्य	23/06/2037	चंद्र	09/05/2038	मंगल	01/02/2039
शुक्र	27/08/2036	सूर्य	26/02/2037	चंद्र	04/07/2037	मंगल	28/05/2038	राहु	17/03/2039

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
17/03/2039		27/02/2040		02/01/2041		10/05/2041		10/05/2042	
27/02/2040		02/01/2041		10/05/2041		10/05/2042		10/03/2043	
शनि	11/05/2039	बुध	11/04/2040	केतु	09/01/2041	शुक्र	10/07/2041	चंद्र	04/06/2042
बुध	29/06/2039	केतु	29/04/2040	शुक्र	31/01/2041	सूर्य	28/07/2041	मंगल	22/06/2042
केतु	19/07/2039	शुक्र	19/06/2040	सूर्य	06/02/2041	चंद्र	27/08/2041	राहु	07/08/2042
शुक्र	15/09/2039	सूर्य	05/07/2040	चंद्र	17/02/2041	मंगल	18/09/2041	गुरु	16/09/2042
सूर्य	02/10/2039	चंद्र	31/07/2040	मंगल	24/02/2041	राहु	12/11/2041	शनि	04/11/2042
चंद्र	31/10/2039	मंगल	18/08/2040	राहु	15/03/2041	गुरु	30/12/2041	बुध	17/12/2042
मंगल	20/11/2039	राहु	03/10/2040	गुरु	02/04/2041	शनि	26/02/2042	केतु	04/01/2043
राहु	11/01/2040	गुरु	14/11/2040	शनि	22/04/2041	बुध	19/04/2042	शुक्र	23/02/2043
गुरु	27/02/2040	शनि	02/01/2041	बुध	10/05/2041	केतु	10/05/2042	सूर्य	10/03/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
10/03/2043		10/10/2043		09/04/2045		09/08/2046		10/03/2048	
10/10/2043		09/04/2045		09/08/2046		10/03/2048		09/08/2049	
मंगल	23/03/2043	राहु	31/12/2043	गुरु	13/06/2045	शनि	09/11/2046	बुध	22/05/2048
राहु	24/04/2043	गुरु	13/03/2044	शनि	29/08/2045	बुध	30/01/2047	केतु	21/06/2048
गुरु	22/05/2043	शनि	08/06/2044	बुध	06/11/2045	केतु	05/03/2047	शुक्र	15/09/2048
शनि	25/06/2043	बुध	24/08/2044	केतु	05/12/2045	शुक्र	09/06/2047	सूर्य	11/10/2048
बुध	25/07/2043	केतु	25/09/2044	शुक्र	24/02/2046	सूर्य	08/07/2047	चंद्र	23/11/2048
केतु	07/08/2043	शुक्र	25/12/2044	सूर्य	20/03/2046	चंद्र	25/08/2047	मंगल	24/12/2048
शुक्र	11/09/2043	सूर्य	22/01/2045	चंद्र	30/04/2046	मंगल	28/09/2047	राहु	11/03/2049
सूर्य	22/09/2043	चंद्र	08/03/2045	मंगल	28/05/2046	राहु	24/12/2047	गुरु	19/05/2049
चंद्र	10/10/2043	मंगल	09/04/2045	राहु	09/08/2046	गुरु	10/03/2048	शनि	09/08/2049

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
09/08/2049		10/03/2050		09/11/2051		10/05/2052		06/10/2052	
10/03/2050		09/11/2051		10/05/2052		06/10/2052		24/10/2053	
केतु	22/08/2049	शुक्र	20/06/2050	सूर्य	18/11/2051	मंगल	18/05/2052	राहु	02/12/2052
शुक्र	26/09/2049	सूर्य	20/07/2050	चंद्र	03/12/2051	राहु	10/06/2052	गुरु	22/01/2053
सूर्य	07/10/2049	चंद्र	09/09/2050	मंगल	14/12/2051	गुरु	30/06/2052	शनि	24/03/2053
चंद्र	25/10/2049	मंगल	14/10/2050	राहु	10/01/2052	शनि	23/07/2052	बुध	17/05/2053
मंगल	06/11/2049	राहु	14/01/2051	गुरु	04/02/2052	बुध	13/08/2052	केतु	09/06/2053
राहु	08/12/2049	गुरु	05/04/2051	शनि	04/03/2052	केतु	22/08/2052	शुक्र	12/08/2053
गुरु	05/01/2050	शनि	10/07/2051	बुध	30/03/2052	शुक्र	16/09/2052	सूर्य	31/08/2053
शनि	08/02/2050	बुध	04/10/2051	केतु	09/04/2052	सूर्य	23/09/2052	चंद्र	02/10/2053
बुध	10/03/2050	केतु	09/11/2051	शुक्र	10/05/2052	चंद्र	06/10/2052	मंगल	24/10/2053

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
24/10/2053		30/09/2054		09/11/2055		05/11/2056		03/04/2057	
30/09/2054		09/11/2055		05/11/2056		03/04/2057		03/06/2058	
गुरु	09/12/2053	शनि	03/12/2054	बुध	30/12/2055	केतु	14/11/2056	शुक्र	13/06/2057
शनि	01/02/2054	बुध	30/01/2055	केतु	20/01/2056	शुक्र	09/12/2056	सूर्य	05/07/2057
बुध	21/03/2054	केतु	22/02/2055	शुक्र	21/03/2056	सूर्य	16/12/2056	चंद्र	09/08/2057
केतु	10/04/2054	शुक्र	01/05/2055	सूर्य	08/04/2056	चंद्र	29/12/2056	मंगल	03/09/2057
शुक्र	06/06/2054	सूर्य	21/05/2055	चंद्र	08/05/2056	मंगल	06/01/2057	राहु	06/11/2057
सूर्य	23/06/2054	चंद्र	24/06/2055	मंगल	29/05/2056	राहु	29/01/2057	गुरु	02/01/2058
चंद्र	21/07/2054	मंगल	17/07/2055	राहु	23/07/2056	गुरु	18/02/2057	शनि	10/03/2058
मंगल	10/08/2054	राहु	16/09/2055	गुरु	09/09/2056	शनि	13/03/2057	बुध	10/05/2058
राहु	30/09/2054	गुरु	09/11/2055	शनि	05/11/2056	बुध	03/04/2057	केतु	03/06/2058

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
03/06/2058		09/10/2058		10/05/2059		21/01/2062		15/06/2064	
09/10/2058		10/05/2059		21/01/2062		15/06/2064		22/04/2067	
सूर्य	10/06/2058	चंद्र	27/10/2058	राहु	05/10/2059	गुरु	17/05/2062	शनि	27/11/2064
चंद्र	21/06/2058	मंगल	08/11/2058	गुरु	14/02/2060	शनि	03/10/2062	बुध	23/04/2065
मंगल	28/06/2058	राहु	10/12/2058	शनि	19/07/2060	बुध	04/02/2063	केतु	23/06/2065
राहु	17/07/2058	गुरु	08/01/2059	बुध	06/12/2060	केतु	28/03/2063	शुक्र	14/12/2065
गुरु	03/08/2058	शनि	11/02/2059	केतु	01/02/2061	शुक्र	21/08/2063	सूर्य	04/02/2066
शनि	23/08/2058	बुध	13/03/2059	शुक्र	16/07/2061	सूर्य	03/10/2063	चंद्र	01/05/2066
बुध	11/09/2058	केतु	25/03/2059	सूर्य	03/09/2061	चंद्र	16/12/2063	मंगल	01/07/2066
केतु	18/09/2058	शुक्र	30/04/2059	चंद्र	24/11/2061	मंगल	05/02/2064	राहु	04/12/2066
शुक्र	09/10/2058	सूर्य	10/05/2059	मंगल	21/01/2062	राहु	15/06/2064	गुरु	22/04/2067

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
22/04/2067		08/11/2069		27/11/2070		27/11/2073		21/10/2074	
08/11/2069		27/11/2070		27/11/2073		21/10/2074		21/04/2076	
बुध	01/09/2067	केतु	01/12/2069	शुक्र	29/05/2071	सूर्य	13/12/2073	चंद्र	06/12/2074
केतु	25/10/2067	शुक्र	03/02/2070	सूर्य	22/07/2071	चंद्र	10/01/2074	मंगल	07/01/2075
शुक्र	29/03/2068	सूर्य	22/02/2070	चंद्र	22/10/2071	मंगल	29/01/2074	राहु	30/03/2075
सूर्य	14/05/2068	चंद्र	26/03/2070	मंगल	25/12/2071	राहु	19/03/2074	गुरु	11/06/2075
चंद्र	31/07/2068	मंगल	17/04/2070	राहु	06/06/2072	गुरु	02/05/2074	शनि	06/09/2075
मंगल	23/09/2068	राहु	14/06/2070	गुरु	30/10/2072	शनि	23/06/2074	बुध	23/11/2075
राहु	10/02/2069	गुरु	04/08/2070	शनि	22/04/2073	बुध	09/08/2074	केतु	25/12/2075
गुरु	14/06/2069	शनि	04/10/2070	बुध	24/09/2073	केतु	28/08/2074	शुक्र	25/03/2076
शनि	08/11/2069	बुध	27/11/2070	केतु	27/11/2073	शुक्र	21/10/2074	सूर्य	21/04/2076

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
21/04/2076		10/05/2077		28/06/2079		08/01/2082		15/04/2084	
10/05/2077		28/06/2079		08/01/2082		15/04/2084		22/03/2085	
मंगल	14/05/2076	गुरु	22/08/2077	शनि	22/11/2079	बुध	06/05/2082	केतु	05/05/2084
राहु	10/07/2076	शनि	23/12/2077	बुध	01/04/2080	केतु	23/06/2082	शुक्र	01/07/2084
गुरु	30/08/2076	बुध	13/04/2078	केतु	25/05/2080	शुक्र	08/11/2082	सूर्य	18/07/2084
शनि	30/10/2076	केतु	28/05/2078	शुक्र	26/10/2080	सूर्य	19/12/2082	चंद्र	15/08/2084
बुध	23/12/2076	शुक्र	05/10/2078	सूर्य	11/12/2080	चंद्र	26/02/2083	मंगल	04/09/2084
केतु	15/01/2077	सूर्य	13/11/2078	चंद्र	26/02/2081	मंगल	16/04/2083	राहु	25/10/2084
शुक्र	20/03/2077	चंद्र	17/01/2079	मंगल	21/04/2081	राहु	18/08/2083	गुरु	10/12/2084
सूर्य	08/04/2077	मंगल	03/03/2079	राहु	07/09/2081	गुरु	06/12/2083	शनि	02/02/2085
चंद्र	10/05/2077	राहु	28/06/2079	गुरु	08/01/2082	शनि	15/04/2084	बुध	22/03/2085

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
22/03/2085		21/11/2087		08/09/2088		08/01/2090		15/12/2090	
21/11/2087		08/09/2088		08/01/2090		15/12/2090		10/05/2093	
शुक्र	31/08/2085	सूर्य	06/12/2087	चंद्र	19/10/2088	मंगल	28/01/2090	राहु	26/04/2091
सूर्य	19/10/2085	चंद्र	30/12/2087	मंगल	16/11/2088	राहु	20/03/2090	गुरु	21/08/2091
चंद्र	08/01/2086	मंगल	16/01/2088	राहु	28/01/2089	गुरु	05/05/2090	शनि	06/01/2092
मंगल	06/03/2086	राहु	29/02/2088	गुरु	03/04/2089	शनि	28/06/2090	बुध	10/05/2092
राहु	30/07/2086	गुरु	08/04/2088	शनि	19/06/2089	बुध	15/08/2090	केतु	30/06/2092
गुरु	07/12/2086	शनि	24/05/2088	बुध	27/08/2089	केतु	04/09/2090	शुक्र	23/11/2092
शनि	10/05/2087	बुध	05/07/2088	केतु	25/09/2089	शुक्र	31/10/2090	सूर्य	06/01/2093
बुध	25/09/2087	केतु	22/07/2088	शुक्र	15/12/2089	सूर्य	17/11/2090	चंद्र	20/03/2093
केतु	21/11/2087	शुक्र	08/09/2088	सूर्य	08/01/2090	चंद्र	15/12/2090	मंगल	10/05/2093

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
10/05/2093		13/05/2096		21/01/2099		02/03/2100		02/05/2103	
13/05/2096		21/01/2099		02/03/2100		02/05/2103		13/04/2104	
शनि	31/10/2093	बुध	29/09/2096	केतु	13/02/2099	शुक्र	10/09/2100	सूर्य	20/05/2103
बुध	05/04/2094	केतु	25/11/2096	शुक्र	22/04/2099	सूर्य	07/11/2100	चंद्र	17/06/2103
केतु	08/06/2094	शुक्र	08/05/2097	सूर्य	12/05/2099	चंद्र	12/02/2101	मंगल	08/07/2103
शुक्र	08/12/2094	सूर्य	26/06/2097	चंद्र	15/06/2099	मंगल	20/04/2101	राहु	29/08/2103
सूर्य	01/02/2095	चंद्र	16/09/2097	मंगल	08/07/2099	राहु	11/10/2101	गुरु	14/10/2103
चंद्र	03/05/2095	मंगल	13/11/2097	राहु	07/09/2099	गुरु	14/03/2102	शनि	08/12/2103
मंगल	06/07/2095	राहु	09/04/2098	गुरु	31/10/2099	शनि	13/09/2102	बुध	26/01/2104
राहु	18/12/2095	गुरु	18/08/2098	शनि	03/01/2100	बुध	24/02/2103	केतु	15/02/2104
गुरु	13/05/2096	शनि	21/01/2099	बुध	02/03/2100	केतु	02/05/2103	शुक्र	13/04/2104

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
13/04/2104		13/11/2105		22/12/2106		28/10/2109		11/05/2112	
13/11/2105		22/12/2106		28/10/2109		11/05/2112		07/10/2114	
चंद्र	31/05/2104	मंगल	06/12/2105	राहु	27/05/2107	गुरु	01/03/2110	बुध	12/09/2112
मंगल	04/07/2104	राहु	05/02/2106	गुरु	13/10/2107	शनि	25/07/2110	केतु	03/11/2112
राहु	29/09/2104	गुरु	31/03/2106	शनि	26/03/2108	बुध	03/12/2110	शुक्र	29/03/2113
गुरु	15/12/2104	शनि	03/06/2106	बुध	21/08/2108	केतु	26/01/2111	सूर्य	12/05/2113
शनि	17/03/2105	बुध	30/07/2106	केतु	20/10/2108	शुक्र	29/06/2111	चंद्र	24/07/2113
बुध	06/06/2105	केतु	23/08/2106	शुक्र	12/04/2109	सूर्य	15/08/2111	मंगल	14/09/2113
केतु	10/07/2105	शुक्र	29/10/2106	सूर्य	03/06/2109	चंद्र	31/10/2111	राहु	24/01/2114
शुक्र	15/10/2105	सूर्य	19/11/2106	चंद्र	29/08/2109	मंगल	24/12/2111	गुरु	21/05/2114
सूर्य	13/11/2105	चंद्र	22/12/2106	मंगल	28/10/2109	राहु	11/05/2112	शनि	07/10/2114

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
07/10/2114		04/10/2115		04/08/2118		11/06/2119		09/11/2120	
04/10/2115		04/08/2118		11/06/2119		09/11/2120		06/11/2121	
केतु	28/10/2114	शुक्र	25/03/2116	सूर्य	20/08/2118	चंद्र	24/07/2119	मंगल	30/11/2120
शुक्र	28/12/2114	सूर्य	16/05/2116	चंद्र	15/09/2118	मंगल	23/08/2119	राहु	24/01/2121
सूर्य	15/01/2115	चंद्र	10/08/2116	मंगल	03/10/2118	राहु	09/11/2119	गुरु	13/03/2121
चंद्र	14/02/2115	मंगल	09/10/2116	राहु	18/11/2118	गुरु	17/01/2120	शनि	09/05/2121
मंगल	07/03/2115	राहु	14/03/2117	गुरु	30/12/2118	शनि	08/04/2120	बुध	30/06/2121
राहु	01/05/2115	गुरु	30/07/2117	शनि	17/02/2119	बुध	20/06/2120	केतु	21/07/2121
गुरु	18/06/2115	शनि	09/01/2118	बुध	02/04/2119	केतु	20/07/2120	शुक्र	19/09/2121
शनि	14/08/2115	बुध	05/06/2118	केतु	20/04/2119	शुक्र	14/10/2120	सूर्य	07/10/2121
बुध	04/10/2115	केतु	04/08/2118	शुक्र	11/06/2119	सूर्य	09/11/2120	चंद्र	06/11/2121

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
06/11/2121		26/05/2124		01/09/2126		11/05/2129		07/10/2129	
26/05/2124		01/09/2126		11/05/2129		07/10/2129		07/12/2130	
राहु	26/03/2122	गुरु	13/09/2124	शनि	03/02/2127	केतु	20/05/2129	शुक्र	17/12/2129
गुरु	28/07/2122	शनि	22/01/2125	बुध	23/06/2127	शुक्र	13/06/2129	सूर्य	07/01/2130
शनि	23/12/2122	बुध	20/05/2125	केतु	19/08/2127	सूर्य	21/06/2129	चंद्र	12/02/2130
बुध	04/05/2123	केतु	07/07/2125	शुक्र	30/01/2128	चंद्र	03/07/2129	मंगल	09/03/2130
केतु	27/06/2123	शुक्र	22/11/2125	सूर्य	19/03/2128	मंगल	12/07/2129	राहु	12/05/2130
शुक्र	29/11/2123	सूर्य	02/01/2126	चंद्र	09/06/2128	राहु	03/08/2129	गुरु	07/07/2130
सूर्य	15/01/2124	चंद्र	12/03/2126	मंगल	05/08/2128	गुरु	23/08/2129	शनि	13/09/2130
चंद्र	02/04/2124	मंगल	30/04/2126	राहु	31/12/2128	शनि	16/09/2129	बुध	12/11/2130
मंगल	26/05/2124	राहु	01/09/2126	गुरु	11/05/2129	बुध	07/10/2129	केतु	07/12/2130

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
07/12/2130		14/04/2131		13/11/2131		10/04/2132		29/04/2133	
14/04/2131		13/11/2131		10/04/2132		29/04/2133		05/04/2134	
सूर्य	14/12/2130	चंद्र	02/05/2131	मंगल	22/11/2131	राहु	07/06/2132	गुरु	13/06/2133
चंद्र	24/12/2130	मंगल	14/05/2131	राहु	14/12/2131	गुरु	28/07/2132	शनि	06/08/2133
मंगल	01/01/2131	राहु	15/06/2131	गुरु	03/01/2132	शनि	27/09/2132	बुध	23/09/2133
राहु	20/01/2131	गुरु	14/07/2131	शनि	27/01/2132	बुध	20/11/2132	केतु	13/10/2133
गुरु	06/02/2131	शनि	16/08/2131	बुध	17/02/2132	केतु	12/12/2132	शुक्र	09/12/2133
शनि	26/02/2131	बुध	15/09/2131	केतु	25/02/2132	शुक्र	14/02/2133	सूर्य	26/12/2133
बुध	16/03/2131	केतु	28/09/2131	शुक्र	21/03/2132	सूर्य	05/03/2133	चंद्र	24/01/2134
केतु	24/03/2131	शुक्र	02/11/2131	सूर्य	29/03/2132	चंद्र	06/04/2133	मंगल	12/02/2134
शुक्र	14/04/2131	सूर्य	13/11/2131	चंद्र	10/04/2132	मंगल	29/04/2133	राहु	05/04/2134

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 3 वर्ष 8 मास 26 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
03/09/2025		31/05/2029		31/05/2037		31/05/2038		30/05/2040	
31/05/2029		31/05/2037		31/05/2038		30/05/2040		31/05/2043	
	00/00/0000	संक	11/03/2031	मंग	10/06/2037	पिंग	10/07/2038	धांय	30/08/2040
	00/00/0000	मंग	31/05/2031	पिंग	30/06/2037	धांय	09/09/2038	भ्राम	29/12/2040
	03/09/2025	पिंग	09/11/2031	धांय	30/07/2037	भ्राम	29/11/2038	भद्रि	31/05/2041
पिंग	29/11/2025	धांय	10/07/2032	भ्राम	09/09/2037	भद्रि	11/03/2039	उल्क	29/11/2041
धांय	30/06/2026	भ्राम	31/05/2033	भद्रि	30/10/2037	उल्क	11/07/2039	सिद्ध	30/06/2042
भ्राम	10/04/2027	भद्रि	10/07/2034	उल्क	30/12/2037	सिद्ध	30/11/2039	संक	01/03/2043
भद्रि	30/03/2028	उल्क	09/11/2035	सिद्ध	11/03/2038	संक	10/05/2040	मंग	31/03/2043
उल्क	31/05/2029	सिद्ध	31/05/2037	संक	31/05/2038	मंग	30/05/2040	पिंग	31/05/2043

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
31/05/2043		31/05/2047		30/05/2052		31/05/2058		31/05/2065	
31/05/2047		30/05/2052		31/05/2058		31/05/2065		31/05/2073	
भ्राम	09/11/2043	भद्रि	09/02/2048	उल्क	31/05/2053	सिद्ध	10/10/2059	संक	11/03/2067
भद्रि	30/05/2044	उल्क	09/12/2048	सिद्ध	31/07/2054	संक	30/04/2061	मंग	31/05/2067
उल्क	29/01/2045	सिद्ध	29/11/2049	संक	30/11/2055	मंग	10/07/2061	पिंग	09/11/2067
सिद्ध	09/11/2045	संक	09/01/2051	मंग	30/01/2056	पिंग	29/11/2061	धांय	10/07/2068
संक	30/09/2046	मंग	01/03/2051	पिंग	30/05/2056	धांय	30/06/2062	भ्राम	31/05/2069
मंग	09/11/2046	पिंग	10/06/2051	धांय	29/11/2056	भ्राम	10/04/2063	भद्रि	10/07/2070
पिंग	29/01/2047	धांय	09/11/2051	भ्राम	30/07/2057	भद्रि	30/03/2064	उल्क	09/11/2071
धांय	31/05/2047	भ्राम	30/05/2052	भद्रि	31/05/2058	उल्क	31/05/2065	सिद्ध	31/05/2073

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
31/05/2073		31/05/2074		30/05/2076		31/05/2079		31/05/2083	
31/05/2074		30/05/2076		31/05/2079		31/05/2083		30/05/2088	
मंग	10/06/2073	पिंग	10/07/2074	धांय	30/08/2076	भ्राम	09/11/2079	भद्रि	09/02/2084
पिंग	30/06/2073	धांय	09/09/2074	भ्राम	29/12/2076	भद्रि	30/05/2080	उल्क	09/12/2084
धांय	30/07/2073	भ्राम	29/11/2074	भद्रि	31/05/2077	उल्क	29/01/2081	सिद्ध	29/11/2085
भ्राम	09/09/2073	भद्रि	11/03/2075	उल्क	29/11/2077	सिद्ध	09/11/2081	संक	09/01/2087
भद्रि	30/10/2073	उल्क	11/07/2075	सिद्ध	30/06/2078	संक	30/09/2082	मंग	01/03/2087
उल्क	30/12/2073	सिद्ध	30/11/2075	संक	01/03/2079	मंग	09/11/2082	पिंग	10/06/2087
सिद्ध	11/03/2074	संक	10/05/2076	मंग	31/03/2079	पिंग	29/01/2083	धांय	09/11/2087
संक	31/05/2074	मंग	30/05/2076	पिंग	31/05/2079	धांय	31/05/2083	भ्राम	30/05/2088

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
30/05/2088		31/05/2094		01/06/2101		01/06/2109		01/06/2110	
31/05/2094		01/06/2101		01/06/2109		01/06/2110		31/05/2112	
उल्क	31/05/2089	सिद्ध	10/10/2095	संक	12/03/2103	मंग	11/06/2109	पिंग	11/07/2110
सिद्ध	31/07/2090	संक	30/04/2097	मंग	01/06/2103	पिंग	01/07/2109	धांय	10/09/2110
संक	30/11/2091	मंग	10/07/2097	पिंग	10/11/2103	धांय	31/07/2109	भ्राम	30/11/2110
मंग	30/01/2092	पिंग	29/11/2097	धांय	11/07/2104	भ्राम	10/09/2109	भद्रि	12/03/2111
पिंग	30/05/2092	धांय	30/06/2098	भ्राम	01/06/2105	भद्रि	31/10/2109	उल्क	12/07/2111
धांय	29/11/2092	भ्राम	10/04/2099	भद्रि	11/07/2106	उल्क	31/12/2109	सिद्ध	01/12/2111
भ्राम	30/07/2093	भद्रि	31/03/2100	उल्क	10/11/2107	सिद्ध	12/03/2110	संक	11/05/2112
भद्रि	31/05/2094	उल्क	01/06/2101	सिद्ध	01/06/2109	संक	01/06/2110	मंग	31/05/2112

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
31/05/2112		01/06/2115		01/06/2119		31/05/2124		01/06/2130	
01/06/2115		01/06/2119		31/05/2124		01/06/2130		00/00/0000	
धांय	31/08/2112	भ्राम	10/11/2115	भद्रि	10/02/2120	उल्क	01/06/2125	सिद्ध	11/10/2131
भ्राम	30/12/2112	भद्रि	31/05/2116	उल्क	10/12/2120	सिद्ध	01/08/2126	संक	01/05/2133
भद्रि	01/06/2113	उल्क	30/01/2117	सिद्ध	30/11/2121	संक	01/12/2127	मंग	11/07/2133
उल्क	30/11/2113	सिद्ध	10/11/2117	संक	10/01/2123	मंग	31/01/2128	पिंग	04/09/2133
सिद्ध	01/07/2114	संक	01/10/2118	मंग	02/03/2123	पिंग	31/05/2128		00/00/0000
संक	02/03/2115	मंग	10/11/2118	पिंग	11/06/2123	धांय	30/11/2128		00/00/0000
मंग	01/04/2115	पिंग	30/01/2119	धांय	10/11/2123	भ्राम	31/07/2129		00/00/0000
पिंग	01/06/2115	धांय	01/06/2119	भ्राम	31/05/2124	भद्रि	01/06/2130		00/00/0000

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	77%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	70%	व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	66%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	59%	धनार्जन
गोमेद	राहु	56%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	53%	धनार्जन
पुखराज	गुरु	47%	नेष्ट भाग्य, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	9%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि

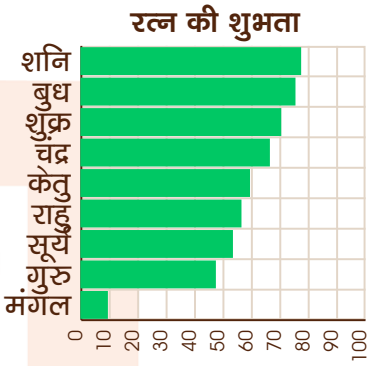

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	10/05/2036	32%	53%	9%	81%	47%	83%	83%	62%	66%
सूर्य	10/05/2042	66%	72%	22%	75%	55%	58%	64%	38%	44%
चंद्र	10/05/2052	60%	78%	9%	81%	47%	70%	77%	38%	44%
मंगल	10/05/2059	60%	72%	34%	62%	55%	70%	77%	38%	66%
राहु	10/05/2077	32%	53%	0%	75%	47%	77%	83%	69%	44%
गुरु	10/05/2093	60%	72%	22%	62%	61%	58%	77%	56%	59%
शनि	11/05/2112	32%	53%	0%	81%	47%	77%	89%	62%	44%
बुध	11/05/2129	60%	53%	9%	88%	47%	77%	77%	56%	59%
केतु	11/05/2136	32%	53%	22%	75%	47%	77%	64%	38%	72%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति

तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम व पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए हीरा, मोती, लहसुनिया, गोमेद एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मूंगा पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपका शरीर सुंदर, पुष्ट और निरोगी रखेगा। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति अच्छी रखेगा। रत्न शुभता से आप एक अच्छे वक्ता और तर्ककुशल व्यक्ति बनेंगे। आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। नीलम रत्न से आपके कई नौकर-चाकर और अनुयायी होंगे। आप राजभय से मुक्त रहेंगे। यश संपति और अधिकार की प्राप्ति में भी नीलम रत्न आपके लिए शुभफलकारी रहेगा। यह रत्न आपको

गुणों का परीक्षक और श्रेष्ठ कर्म करने वाला व्यक्ति बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड्ली में बुध एकादश भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना धारण करना आपके लिए शुभफलदायक रहेगा। पन्ना रत्न प्रभाव से आप ईमानदार और विनम्र स्वभाव के स्वामी बनेंगे। रत्न शुभता से आप अपनी बातों को निभाने का पूरा प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न को धारण करने से आप अपने गुणों के कारण लोकप्रिय होंगे। आप कुछ न कुछ नया जानने का प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न आपको भाग्यशाली और सुखी बनाएगा। रत्न शुभता आपको सेवकों का सुख और उत्तम वाहनों का सुख देगा। यह रत्न आपको शिल्पकला, लेखन या व्यापार के माध्यम से भी धन देगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी,

कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। चंद्र रत्न मोती धारण कर आप पराक्रम से धन प्राप्त करने में सफल हो सकते है। मोती रत्न आपको धार्मिक, यशस्वी, प्रसन्न, आस्तिक एवं मधुरभाषी बनायेगा। मोती रत्न बन्धु बान्धवों से रिश्ते मजबूत होंगे। रत्न प्रभाव आपके चरित्र को उत्तम रखेगा और आप सत्य का साथ देंगे। मोती रत्न से आपके वितीय विषय आपके पक्ष में रहेंगे।

छोटी यात्राएं आपके लिए सुखद रहेंगी। चंद्र रत्न आपकी धर्य शक्ति का विकास कर रहा है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप

और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यों में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि षष्ठ भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आप अपने शत्रुओं पर चातुर्य से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं पर अनायास ही विजय प्राप्त होगी। यह रत्न आपको उदार हृदय और सामान्य से अधिक बुद्धिमान बना रहा है। आप विद्वान, ऐश्वर्यवान होकर ऋण मुक्त जीवन-यापन करेंगे। इस रत्न को धारण करने से आपके रोगों में कमी होगी। आप गंभीरता के साथ अपने प्रतियोगियों को परास्त करेंगे। आपको उच्च प्रतिष्ठा, सुख और प्रभुता की प्राप्ति होगी। रत्न शुभता आपको बड़े कार्य करने के अवसर देगी। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण

करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपके लिए कार्यो को अंजाम तक पहुंचाना कठिन हो सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव ला सकता है। पुखराज रत्न आपको मित्रों एवं सेवकों का सहयोग प्राप्त करने में बाधाएं दे सकता है। सरकारी कार्यो के लिए भी रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपको अविवेकी कर आपके सदाचार भाव में कमी ला सकता है। इसके प्रभाव से आप अत्यधिक धार्मिक परायण हो सकते है। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों को अधिक से अधिक समय दे सकते है। इस रत्न से आपका कानूनी क्षेत्र, कलर्क का काम और दूर प्रवास में आजीविका कार्य बाधित हो सकते हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न

की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपमें साहस एवं हिम्मत की कमी हो सकती है। इसके कारण जीवन में आने वाले विपरीत समय का आप साहस के साथ मुकाबला नहीं कर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको झूठे दोषारोपण दे सकता है। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपको गुप्त चोटें भी लग सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपकी गुरु भक्ति भावना में कमी भी संभावित है। इस रत्न से आपका स्वयं पर विश्वास कुछ कम हो सकता है। आप स्वयं को असफल मान सकते है। वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। मूंगा रत्न धारण पर आपके जीवन की उन्नति प्रतियोगियों के कारण प्रभावित हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपके रोग, ऋण और विरोधी अधिक प्रभावी हो सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(03/09/2025 - 10/05/2036)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(10/05/2036 - 10/05/2042)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, माणिक्य, नीलम, हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(10/05/2042 - 10/05/2052)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(10/05/2052 - 10/05/2059)

मंगल की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, हीरा, लहसुनिया, पन्ना, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(10/05/2059 - 10/05/2077)

राहु की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में

से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/05/2077 - 10/05/2093)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पन्ना, पुखराज, माणिक्य, लहसुनिया, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/05/2093 - 11/05/2112)

शनि की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(11/05/2112 - 11/05/2129)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(11/05/2129 - 11/05/2136)

केतु की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, गोमेद व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ऊँ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात

मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं। हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने

का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

मंगल द्वादश भाव में है। पुरुषार्थ से किये गए सभी कार्य आपके सफल हो सकते है। आपका स्वभाव कठोर, शंकालु, असत्यभाषी, अल्प धर्मपरायण, शत्रुहन्ता, मामा को कष्ट, बाहर के लोगों द्वारा धन-नाश, वात- पित रोगी, और संतान जन्य चिंता दे सकता है ।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/09/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी तथा सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगी। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी। आपके पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगी।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी। परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगी जिससे कार्य क्षेत्र में आप उन्नति प्राप्त करेंगी। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। यदा कदा

पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी। आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे ।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।

8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक तीन होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक तीन होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह है। बृहस्पति या गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगी तथा अपने अधिनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगी। काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगी। इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी। गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर के कार्य तथा धर्म-कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित महिला होंगी तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगी और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देती रहेंगी।

दान-पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगी। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसन्द करेंगी। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगी। स्वभाव से आप शान्त, कोमल हृदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगी। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुये कष्टों को भी सहन करेंगी एवं अन्त में विजयश्री को प्राप्त करेंगी। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा। लेकिन कभी-कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदर विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाली महिला के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगी। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगी।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगी। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगी। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगी। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगी और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगी जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता रहे और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

आपका मूलांक 3 है तथा आपका भाग्यांक भी 3 है। मूलांक एवं भाग्यांक 3 का स्वामी गुरु है। मूलांक एवं भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर गुरु ग्रह के प्रभाव द्विगुणित हो जाएंगे एवं मूलांक तथा भाग्यांक का पूर्ण फल आपको प्राप्त होगा। आप अपने रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में अपनी प्रमुखता स्थापित करेंगी एवं अधीनस्थों से कार्य निकलवाने में निपुण रहेंगी। अपने जीवन में आप काफी धन-संपत्ति एकत्रित करेंगी तथा भूमि, वाहन का अच्छा सुख प्राप्त करेंगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप एक ईमानदार व्यक्ति की हैसियत बनाएंगी एवं सत्य के मार्ग पर

चलेंगी। इस कारण थोड़े बहुत कष्टों का भी आपको सामना करना पड़ेगा, लेकिन अंत में सफलता प्राप्त करेंगी। आप ऐसे ही रोजगार का चुनाव करेंगी, जिसमें आपकी प्रमुखता रहे एवं लोग आपकी बात को मानें। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च कोटि की रहेगी तथा लोग आपको भरपूर मान-सम्मान प्रदान करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी आप उन्नतिशील रहेंगी।

आपका भाग्योदय 21 वर्ष की आयु से प्रारंभ होगा, 30 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 39 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 3, 6, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक-भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन्, या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते है तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आपके प्रवृति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगी तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपके प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृति काफी व्ययशील होगी। आपके प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगी तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगी।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगी जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगी। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में स्व प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही पैतृक सम्पति भी आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न एवं धातुओं को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी । आप भूमि या जायदाद संबंधी क्रय विक्रय या संबंधित कार्यो से भी लाभ अर्जित कर सकती हैं। साथ ही कृषि या बागवानी संबंधी कार्यो में भी आपकी रूचि रहेगी। आप एक महत्वांकाक्षी महिला होंगी तथा जीवन में परिवार के सहयोग से इच्छित उन्नति एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी लेकिन विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप स्वयं असमर्थ समझेंगी।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा के लिए सुख संसाधनों के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही उनकी सन्तुष्टि के लिए अधिक मात्रा में व्यय भी करेंगी। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी तर्क पूर्ण बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अधिकाशं लोग आपसे सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान की आप प्रिय रहेंगी तथा रूचि पूर्वक इसका भक्षण करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी परन्तु प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराओं का आप पूर्ण पालन करेंगी तथा शुभ एवं मंगल कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन लोगों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव बना रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा दीर्घ काल तक स्मृति बनी रहेगी जिससे सामाजिक तथा अन्य क्षेत्र में आपको शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी। भाई बहिनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनकी सुख सुविधाओं के प्रति चिंतित रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। वे सभी आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे अतः उनकी गलतियों की भी आप उपेक्षा करेंगी। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांतो पर दृढ़ रहेंगी चाहे इससे कोई परेशानी या समस्याएं क्यों न उत्पन्न हो। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा नेतृत्व के गुण भी आप में विद्यमान रहेंगे। आप किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर उसके बारे में अपनी राय प्रदान करेंगी। आप सद् विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी। आधुनिक संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इसमें टेलीफोन टेलीविजन या वाहन आदि की प्रमुखता रहेगी। संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इससे भी अपना मनोंरजन करेंगी। आपके लिए समीपस्थ स्थानों की यात्राएं लाभदायक एवं ख्याति प्रदान करने वाली होंगी। साथ ही आपकी अध्ययन में रूचि होगी तथा धार्मिक ग्रन्थ वैज्ञानिक या साहित्यिक पुस्तकों का आप अध्ययन करेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था की पदाधिकारी या उच्चाधिकारी होंगी तथा दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगी जिससे समाज में आदरणीया समझी जाएंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगी। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आदरणीय महिला मानी जाऐंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। विवाह के बाद पति के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगी। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकती है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का ध्यान से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उतीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगी। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्राप्त करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुंभ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा राहु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुबिमता से समस्त सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा उनमें आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। लेकिन राहु के प्रभाव से आप में अवसरानुकूल शीघ्र सटीक निर्णय लेने की क्षमता अल्प होगी जिससे यदा-कदा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विषयों, विज्ञान एवं पाश्चात्य भाषा में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक उनके ज्ञानार्जन में रुचिशील होंगी तथा एक विदुषी के रूप में अपनी स्थिति स्थापित करने में समर्थ होंगी।

राहु की पंचम भावास्थ स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाव के लिए आप ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। लेकिन आपको इन प्रेम-प्रसंगों में मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वैसे आप प्रेम सम्बन्धों में आदर्शवादिता का भी प्रदर्शन कर सकती हैं।

संतति भाव में राहु के प्रभाव से आपको पुत्र संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति तेजस्वी, पराक्रमी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में सामान्य आदर का भाव होगा परन्तु वे अपने ही मन की करने वाले होंगे। अतः यदा-कदा माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना भी कर सकते है। वे अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को भी स्वेच्छा से ही करेंगे तथा इसमें माता-पिता की सलाह कम ही लेंगे। लेकिन आपको इसकी चिन्ता कम ही करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देना चाहिए इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी उपेक्षा कर सकते है ऐसी स्थिति में अपने लिए वांछित धन अर्जित करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति सामान्य रूप से उन्नति शील होगी तथा परिश्रम पूर्वक वे सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। आपके बच्चे तेजस्वी एवं पराक्रमी होंगे तथा यदा-कदा अन्य जनों से वे वाद-विवाद भी कर सकते है। इससे आपके लिए यद्यपि अनावश्यक परेशानी होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति संभालने में समर्थ होंगे। इस प्रकार संतति से सुख आपके लिए सामान्य ही होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही अन्य शत्रु भी मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। आपके सेवक भी आपके लिए आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगी तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले से ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी। साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगी परन्तु इसमें हानि की अवस्था में ऋण आदि भी ले सकती है लेकिन कर्जदाता आपसे विशेष सहयोग नहीं करेंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके मान सम्मान में न्यूनता कर सकते हैं। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश अच्छे कार्यो में करके आपको बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए । इसके साथ ही अवसरनुकूल बन्धुवर्ग या अन्य संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते है। अतः सोच समझकर किसी भी कार्य को प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक जमीन जायदाद या फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा जीवन में दाम्पत्य जीवन की मधुरता में न्यूनता आ सकती है। मामा मामी से आपके संबंध मध्यम ही रहेंगे तथा परस्पर सहयोग के भाव में न्यूनता ही रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब भी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो, तंत्र मंत्र या अन्य कार्यो से शान्ति एवं सफलता अर्जित करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। वृश्चिक राशि के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त, सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे। शुक्र के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। वह सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित रहेंगे तथा संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह बंधु वर्ग या संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा सप्तम भाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से आप प्रेम विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगी। इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि मित्रवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि पर भी आपका विश्वास रहेगा तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान भी प्राप्त कर सकती हैं। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की हमेशा प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से सुसम्पन्न रहेगी। अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगी। आप मित्र या बन्धुवर्ग से जायदाद की भी प्राप्ति कर सकती हैं। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी आपको प्राप्त होगी। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनकर समाज में इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनवान एवं सर्वप्रकार के गुणों से परिपूर्ण रहेंगे जिससे आपको कोई भी परेशानी नहीं होगी। आपकी प्रवृत्ति पार्टियों को भी आयोजित करने की रहेगी जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता होगी। बीमा आदि करके भी आपको इच्छित लाभ हो सकता है अतः अवसरानुकूल आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। साथ ही आपके घर में चोरी आदि की कोई बड़ी घटना नहीं होगी तथापि अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को पहले से ही किसी सुरक्षित स्थान में रख लेना चाहिए । दुर्घटना आदि के योग भी सामान्यतया अल्प रहेंगे तथा अपनी सतर्कता से इन घटनाओं सेसुरक्षित रहने में सफलता प्राप्त करेंगी तथापि आपको तीव्र गति से वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा जीवन में आनन्द एवं सुख का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा पैतृक एवं पारिवारिक नियमों के अनुसार अपने धर्म के अनुपालन में तत्पर रहेंगी। ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा भाग्यबल से इच्छित धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल तीर्थ यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी ।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का आप रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी तथा ध्यान योग, तंत्र मंत्र तथा ज्योतिष आदि में भी आपका विश्वास रहेगा एवं न्यूनाधिक रूप से इनका ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सकें तो अपनी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति के द्वारा आप पूर्वाभास तथा भविष्य वाणी करने में सफलता अर्जित कर सकती हैं।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने के लिए आत्मबल प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असन्तुलन के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान में वृद्धि होगी। इससे जीवन में स्थायित्व आएगा तथा धनवैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान तथा विदुषी महिला होंगी तथा अपनी योजनाओं को बिना किसी रूकावट के सम्पन्न करेंगी। प्रथम पौत्र से आपको अत्यधिक सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही जीवन में अन्यत्र भी शुभ एवं पुण्य कार्य करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा, सौभाग्यशाली, अतिथि सत्कार करने वाली तथा दीन दुःखियों पर कृपा करने वाली होंगी। तथा परोपकार संबंधी कार्य करने में भी तत्पर रहेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। साथ ही शुक्र भी दशमभाव में ही स्थित है। कर्क राशि एवं शुक्र दोनों जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करती रहेंगी। ऐसे सामायिक परिवर्तनों से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी जिससे मानसिक सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता बनी रहेगी।

दशमभाव में कर्क राशि में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, दूरदर्शन आदि में कलाकार, इलैक्ट्रोनिक्स का क्षेत्र, न्याय विभाग यथा वकील, न्यायाधीश, न्यायलयीय कर्मचारी, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक, जहाजरानी विभाग, जलसेना आदि शुभ एवं अनुकूल रहेंगी। इन क्षेत्रों एवं विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी सोना आदि धातु कार्य चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का व्यापार आयात निर्यात संबंधी व्यापार, रेशमी वस्त्र, मूल्यवान मदिरा आदि का व्यापार शुभ एवं अनुकूल रहेगा। साथ ही फिल्म निर्माण या वितरण के क्षेत्र में भी आप लाभ एवं धन अर्जित कर सकती हैं। अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

दशमभाव में शुक्र के प्रभाव से जीवन में आप इच्छित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद भी प्राप्त करेंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा वांछित आदर भी प्रदान करेंगे। आप सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं तथा क्लबों आदि में भी किसी सम्मानित एवं उच्चपदाधिकारी के रूप में मनोनीत हो सकती है जिससे आप इच्छित सम्मान अर्जित करेंगी एवं समाज में दूर दूर तक आपकी प्रतिष्ठा व्याप्त होगी।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी शिक्षित बुद्धिमान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करके उन्हें वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव होगा तथा शिक्षा की समुचित व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी अपनी बुद्धिमता एवं उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंधों में मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता भी रहेगी। इसके अतिरिक्त जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा आर्थिक रूप से धनार्जन उत्तम रहेगा। आप महत्वाकांक्षी होंगी तथा मन में कई उमंगे एवं इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही सौभाग्य के बल पर अधिकाशंतया इनकी पूर्ति में सफल भी रहेंगी। सरकार, औषधि विज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में आप विशेष रूप से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा इन्हीं के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त योग आपके पति की कुंडली में घटित होंगे। इस प्रकार धनार्जन की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में इच्छित सुख, सहयोग, लाभ एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी पितृवत् उनको आदर प्रदान करेंगी।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र शिक्षित बुद्धिमान एवं चतुर होंगे। आप एक समाजिक प्राणी होंगी तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य जनों की भलाई तथा सहयोग करने के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। सामूहिक कार्य या मनोंरजन करना आपको रुचिकर लगेगा। जीवन में आप किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान को भी अर्जित करने में सफल हो सकती है। आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा गर्मी आदि से आपको परेशानी हो सकती है एवं बाएं कान में भी किसी परेशानी से कष्ट होगा। परन्तु आपका सामान्य जीवन धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुदृढ़ रहेंगी। जीवन में आपको एकानेक साधनों से धन की प्राप्ति होगी लेकिन आपका रहन सहन खान पान आदि उच्च स्तर का रहेगा अतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन के बाद भी उचित मात्रा में बचत कम ही होगी तथा व्यय ही अधिक रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों तथा उपकरणों पर उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। साथ ही वस्त्र आदि भी सुदंर कीमती एवं आकर्षक रहेंगे। इस प्रकार आप अपनी धनाढ्यता का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा जिसकी सजावट में काफी व्यय होगा। वास्तव में आप कलात्मक रूप से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी तथा इसके लिए अधिकाधिक धन व्यय की आवश्यकता रहेगी। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इनकी प्राप्ति में कितना भी व्यय क्यों न हो आप उसे अवश्य प्राप्त करेंगी। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ मंहगे होटलों में भोजन या नाश्ता करना आपका शौक रहेगा। अतः आपकी वैभवशालीनता तथा सफलता को देखकर शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे जिससे कभी कभी मानसिक रूप से आप तनाव ग्रस्त भी रहेंगी

यात्रा करने में आप रूचिशील रहेंगी तथा देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी। इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। यद्यपि इनमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य में लाभ तथा प्रसिद्धि के योग बनेंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न कर सकती हैं। इसके साथ ही विदेश में काफी समय तक प्रवास भी करेंगी।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निधारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी मध्य, गण मनुष्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग सर्प तथा योनि वानर होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "ध" या "धा" से प्रारम्भ होगा यथा- धनवती।

आपका जीवन सुख एवं समृद्धि से सदैव सुसम्पन्न रहेगा तथा जीवन में समस्त सुख संसाधनों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगी। समाज में अन्य लोगों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त ही शालीनता युक्त रहेगा जिससे सभी लोग आपसे सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। इसके साथ ही आपकी वाणी भी अत्यन्त ही मधुर होगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा यथोचित मान सम्मान को प्रदान करेंगे। आप एक निर्भय चरित्र की महिला होंगी तथा अन्य सामाजिक जनों के लिए एक उदाहरण रहकर धनधान्यादि से भी आप सुसम्पन्न रहकर इनका अभाव महसूस नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप एक सर्वमान्य बुद्धिमान तथा गुणवान पुरुष को पति के रूप में प्राप्त करेंगी जिससे आपका गृहस्थ सुख अत्यन्त ही उत्तम रहेगा। आपके मन में भेदभाव की भावना का सर्वथा आभाव रहेगा। अतः समाज के सभी वर्गो में आप सम्माननीय रहेंगी तथा लोकप्रियता को भी प्राप्त करेंगी। आप स्थिर मित्रता करना ही श्रेयकर समझेंगी । अतः आपके सभी मित्र बुद्धिमान तथा शिक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त विपुल धनैश्वर्य की भी आप स्वामिनी रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके मन में दूसरे लोगों की भलाई करने की इच्छा की प्रबलता स्वभाविक रूप से ही विद्यमान रहेगी। अतः स्वजनों तथा संबंधियों के अतिरिक्त किसी अनजान व्यक्ति की भी भलाई करने में आप किसी प्रकार की आशंका नहीं करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उसे अपनी सहायता प्रदान करेंगी। इस प्रकार आपको समाज में हार्दिक सम्मान प्राप्त होगा। आप एक भाग्यवती

महिला भी सिद्ध होंगी तथा अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्पपरिश्रम से ही स्वतः सिद्ध होते रहेंगे जिसमें भाग्य का प्रमुख सहयोग रहेगा। आप की तीव्र बुद्धि रहेगी तथा विविध प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने तथा कार्यो को सिद्ध करने में अत्यन्त ही निपुण होंगी जिससे लोग आपको विदुषी के रूप में आदरणीय मानेंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप स्वभाव से सुशील रहेंगी तथा सभी स्त्रियोचित्त सद्गुणों से युक्त रहेंगी तथा जीवन में अधिकांश वैभव एवं ऐश्वर्य से सुशोभित रहेंगी। हृदय से आप हमेशा प्रसन्न रहेंगी तथा चिन्ता करने की सर्वथा उपेक्षा ही करेंगी। इसके साथ ही आप में स्वभाविक शान्ति भी होगी तथा विपत्ति काल में भी शान्ति एवं धैर्य के साथ सामना करने में सक्षम रहेंगी।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यो को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका कण्ठ तथा मुखभाग दीर्घ रहेगा तथा ओठ, कान तथा दान्त भी सुन्दर होंगे। एवं भुजाएं पुष्ट रहेगी। आप दानशीलता की भावना से युक्त रहेगी तथा समय के अनुसार अपनी इस प्रवृति का समाज में अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा काव्यलेखन में आप ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आप एक उत्तम श्रेणी की वक्ता होंगी तथा अपने ओजस्वी भाषणो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अतः शारीरिक बल का आप में अभाव नही रहेगा। साथ विभिन्न प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी आप

अपनी बुद्धिमता का परिचय देंगी। आप चित्रकला के प्रति विशेष रूचि रखेंगी तथा इसमें विशेष योग्यता को अर्जित करेंगी। आप का स्वभाव गम्भीरता से भी युक्त रहेगा तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव रहेगा फलतः धर्म की आप अच्छी ज्ञाता होंगी। अपने बन्धुवर्ग से आप के सामान्य संबंध रहेंगे। आप प्रेम एवं स्नेह से किसी भी कार्य को प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए तत्पर रहेगी परन्तु दबाव या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नही करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र सुन्दर एवं गोल आकृति के रहेंगे तथा हाथ एवं कन्धों में भी दीर्घता का आभास होगा। आपका वक्षस्थल विस्तृतता को प्राप्त होगा। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव आ सकता हैं। आप नदी या जल के किनारे निवास करने या घूमने के लिए अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील भी रहेंगी। आप गूढ़ से गूढ़ विषयों का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता से ही रहने की कोशिश करेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अवश्य ही प्रकट करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार भी मानेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा नित्य अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप में वाक्चातुर्य की प्रधानता रहेगी तथा इसी गुण से अपने अधिकाँश कार्यों में सफलता अर्जित कर सकेंगी। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल इसका पालन भी करती रहेंगी। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेगा। साथ ही आप शूरवीर एवं साहसी महिला भी होंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप हमेशा सफल रहेंगी तथा शत्रु भी आपसे हमेशा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी तथा धनाढ्य लोगों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार की कलाओं में भी प्रवीणता का प्रदर्शन करेंगी तथा स्वभाव से विनम्र तथा सुशील होंगी। आप एक सदाचारी महिला होंगी जो अन्य जनों के लिए अनुकरणीय रहेंगी। आप अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करेंगी जिससे अन्य जन आपकी स्पष्टवादिता से प्रभावित होंगे। इसके साथ ही आप अपनी आय को देखकर ही सोचविचारकर व्यय करेंगी फलतः अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सामान्यतया सभी अंग सुन्दर एवं सुडौलता को प्राप्त रहेंगे तथा अपने कुल अथवा परिवार में श्रेष्ठ एवं सम्माननीय समझी जाएंगी तथा सभी परिवारिक जन आपको यथोचित सम्मान तथा स्नेह प्रदान करेंगे। चित्रकला के क्षेत्र में आप आशातीत सफलता प्राप्त कर सकती हैं।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप स्वभाव से ही निर्भय होंगी तथा जीवन में सत्य का पालन करने के लिए सदैव यत्नशील रहेंगी। आप स्थिर कार्यों को करने के लिए ही उत्सुक रहेंगी। समाज में अन्य लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा आदर का भाव ही विद्यमान रहेगा। आप गुणवान तथा बुद्धिमान पुरुष की पत्नी होने का गौरव प्राप्त करेंगी तथा जीवन में सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगी। साथ ही आप की वाणी भी कर्णप्रिय रहेगी। आपका शरीर स्थूलता से भी युक्त रहेगा

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वप्रकार के गुणों से सुशोभित होकर समाज में पूर्ण रूपेण आदरणीय तथा सम्माननीय रहेंगी। आपके मन में ब्राहमण देवता तथा गुरुजनों के प्रति अत्यन्त ही श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा जिसका आप समय समय पर पालन भी करती रहेंगी। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करेंगी। लेकिन सहनशीलता का आप में अभाव रहेगा। अतः यदा कदा इससे आप को कष्ट की अनुभूति भी होगी।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार आप इनका पूजार्चन करती रहेंगी। यदा कदा आप बिना किसी कारण के ही उत्तेजित हो जाएंगी तथा छोटी छोटी बातों में अभिमान का प्रदर्शन करेंगी। मन से आप दयालु रहेंगी तथा शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी। साथ ही आप अन्य कलाओं के क्षेत्र में भी पूर्ण ज्ञान रखेंगी। आप अत्यन्त बुद्धिमती महिला होंगी तथा शरीर की कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। आपके द्वारा अन्य कई लोग भी सुख को प्राप्त करेंगे।

आप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा दानशीलता का भाव आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा एवं अवसरानुकूल आप दीन दुःखियों की सहायता करती रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए यत्नशील रहेंगी अनावश्यक भौतिकता आपको पसन्द नहीं रहेगी। इसके अतिरिक्त आप उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा समाज में आप का इस रूप में उचित आदर सत्कार होता रहेगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति में कभी कभी चंचलता का प्रभाव रहेगा। आपको मीठा खाना अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अतः इसके लिए आप यत्नशील रहेंगी। धन सम्पत्ति के प्रति आपके मन में आसक्ति अधिक रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए व्याकुलता का भी प्रदर्शन करेंगी। कभी कभी आपका अन्य जनों के साथ में परस्पर विवाद भी सम्पन्न होगा। कामभावना की प्रबलता भी आप में रहेगी। साथ ही आपकी सन्ततियां गुणवान एवं बुद्धिमान रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक शूरवीर तथा साहसी महिला होंगी तथा साहस पूर्वक विषम परिस्थितियों का मुकाबला करेंगी एवं अन्ततः उनका समाधान करने में सफल सिद्ध होंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव

से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अरिष्ट फल दायक हैं। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं

उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान से 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से खास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग-अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

वाहनार्थतृतीयेषु भाग्यकर्मभवाधिपाः ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-177 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुख, लाभ एवं पराक्रम भाव में नवमेश, दशमेश एवं लाभेश हो तो जातक को वाहन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र,सूर्य योग की संभावना : 1728 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रतीत होता है।

मूक योग

चरग्रहसमायुक्ते सुखे तद्राशिनायके ।
षष्ठे भौमे व्ययगते मूकत्वं प्राप्यते नरः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-74 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुख भाव चर ग्रह से युक्त हो तथा सुखेश षष्ठ भाव में हो और व्यय स्थान में मंगल हों तो जातक मूक होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल योग की संभावना : 432 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। अतः आप गूंगा होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः।

।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमर्हीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-246

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,सूर्य,केतु,बुध योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।